तृतीय अध्याय

" शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं की विशेषताएँ "

तृतीय अध्याय

" शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं की विशेषताएँ "

प्रस्तावना

शंकर शेष जी ने अपने नाटक साहित्य में नायिकाओं के विविध रूप चित्रित किये है । उनके नाटकों में नारी के विभिन्न रूप हमें नजर आते है । शेष जी के नाटक सामाजिक, पौराणिक, मिथक, राजनीतिक आदि विषयों पर होने के कारण उन्होंने नायिकाओं को विविध रूपों में चित्रित किया है । एक तरफ वह संघर्षशील,स्वाभिमानी,पतिनिष्ठ नजर आती है तो दूसरी तरफ भावनाशील, आशावादी ,पति से असीम प्यार करनेवाली, क्षमाशील, कर्तव्यनिष्ठ दिखाई देती हैं । ये नायिकाएँ कभी ममता की मूरत, भावुक नजर आती है तो समय आने पर दुर्गा और रणचंडी होकर परिस्थितियों का ड़टकर सामना करती हुई दिखाई देती है। शेष जी ने अपने नाटकों में नायिकाओं को विविध रूपों में उजागर किया है । अतः उनकी विशेषताएँ निम्न प्रकार से विश्लेषित की गयी है ।

3:1 संघर्षशील नायिका :

ऐसा कोई इंसान नहीं जिसके जीवन में कोई मुश्किल न आयी हो । हर इंसान को मुश्किलों का, मुसीबतों का सामना तो करना पड़ता है । फर्क सिर्फ इतना ही है कि, इन मुश्किलों का सामना कोई ड़टकर करता है तो कोई उससे पीछा छुड़ाकर पलायन करता है । अत : जीवन में आयी मुसीबतों का, प्रतिकुल परिस्थिति का सामना जो ड़टकर करता है, वही संघर्षशील कहलाता है । शंकर शेष जी के ज्यादातर नाटकों की नायिकाएँ भी मुसीबतों का सामना करती हुई नजर आती है । उनकी यह संघर्षशीलता अंत तक दिखाई देती है, और उनमें से कही उद्देश्य में सफल हुई हैं ।

शेष के " **मूर्तिकार** " नाटक की नायिका ललिता प्रतिकूल परिस्थितियों से जुझती हुई नजर आती है । आर्थिक कठिनाइयों के कारण वे छः महिने का किराया नहीं दे पाते तो मकान मालिक किराया के ऐवज में ललिता को खरीदने की ख्वाईश रखता है । वह अपने मुंशी को हर दम ललिता के पास तरह तरह के प्रलोभन दिखाने के लिए भेजता है । पर हर वक्त ललिता मुंशी को मुँह -तोड जवाब दे वापस भेजती है । ललिता को अपनी बात ना मानते देख मकान मालिक मुंशी के जरिए ललिता को कुर्की लाने की धमकी देता है । तब भी ललिता अपने निर्णय पर अटल रही हुई नजर आती है, क्योंकि उसे अपना चारित्रिक पतन कतई मंजुर नहीं । वह मुंशी को स्पष्ट कहती है, "... आपके अत्याचार हमें तोड नहीं सकते मुंशीजी । वे ठीक इसके विपरीत दृढ़ता देंगे । शेखर यदि कला के लिए मर

सकता है, तो उसकी पत्नी इज्जत के लिए भी मर सकती है ।"[1] अत : ललिता अंत तक इसके लिए संघर्ष करती नजर आती है ।

" तिल का ताड़ " की नायिका मंजू बालविधवा है । वह जिंदगी से समझोता कर जी रही होती है कि उसके जीवन में अजय नाम का अनाथ लड़का आ जाता है जो मिल में काम करता है । दोनों एक- दूसरे का दु :ख जानकर शादी कर लेते हैं । उनकी गृहस्थी अच्छी चल रही होती है कि मजदूर आंदोलन भाग लेने कारण अजय को पुलिस पकड़कर ले जाती है । मंजू फिर से अकेली पड़ जाती है । फिर भी वह अपनी हिम्मत नहीं हारती । आर्थिक कमाई का कोई साधन न देखकर मंजू नौकरी ढूंढने के लिए निकल पडती है । नौकरी के लिए उसे अपना शहर छोड़कर दूसरे शहर जाना पडता है । तो भी वह पीछे नहीं हटती । अत : मंजू आनेवाली मुसीबतों से मुकाबला कर उनसे रास्ता ढूँढतीहुई नजर आती है ।

" बाढ़ का पानी " की नायिका लछमी के गाँव में बाढ़ का पानी भर आने पर सारा गाँव बह जाता है । सारी फसल बरबाद हो जाती है । तब गाँव के लोग अछूतों की बस्ती जो ऊँचे टीले पर है वहाँ शरण लेते है । लछमी का घर भी इसी ऊँचे टीले पर हैं । वह गाँववालों की हर तरह से मद्द करती है । उन्हें अनाज तो देती है, साथ ही अपने घर में आसरा भी देती नजर आती है । फिर से नये हल, बीज,बैल की जरूरत आ पड़ने के कारण सब लोग चिंतित हो जाते है । ठाकूर की बेटी कावेरी जिसने लछमी के घर आसरा लिया है, वह भी इस समस्या से चिंतित होती है । तो लछमी कावेरी को ढाढ़स बंधाते हुए कहती है कि," सोच - सोच कर क्या होगा बेटी , आखिर जो सामने है उसका तो सामना करना ही पडेगा । "[2] यहाँ लछमी आनेवाली मुसीबतों से लडने में विश्वास रखनेवाली प्रतित होती हैं ।

" बंधन अपने अपने " की नायिका चेतना को जब पता चलता है, कि उसके गुरू डॉ. जयंत उससे शादी करने की कामना रखते है तो वह इसका साफ विरोध करते हुए नजर आती है क्योंकि वह डॉ. जयंत के छोटे भाई अनादि से प्यार करती है और उसी से शादी करना चाहती है । इसी कारण जब अनादि चेतना को डॉ. जयंत से शादी कर लेने को कहता है तो चेतना उस पर आपत्ति जताते हुए अनादि से कहती है -" महत्वाकांक्षा के उपलब्धि के बाद की थकावट मिटाने के लिए किया गया प्यार प्रेम मुझे स्वीकार नहीं है ।"[3] इस तरह चेतना जीवन में आये इस स्थिति में दृढता के साथ अपना निर्णय सुनाते हुए और उस पर अड़िग रहते नजर आती है ।

" कालजयी " में भी इसी प्रकार की नायिका पुरबी है जो राजा कालजयी की सौ वर्ष से चली आ रही अत्याचारी शासन व्यवस्था को खत्म करने के लिए निर्माण हुए ' प्रजातंत्र ' दल की सदस्या है । जब कालजयी पुरबी और उसके सहयोगियों को राजद्रोह के आरोप में कैद कर पुरबी को मौत की सजा

सुनाता है । तब भी उसका साहस नहीं टूटता । कैद में होने पर भी स्थिति की नजाकत को जानकर पुरबी स्वतंत्रता के प्रतिमा के हाथ से तलवार लेकर कालजयी के पेट में भोंक देती है जिस कारण कालजयी की मृत्यु होती है । अत : पुरबी के संघर्षशील वृत्ति के कारण ही वह बड़ी चतुरता से कालजयी को मार डालकर सौ वर्षो से चली आ रही गुलामी की दासता को खत्म करती है ।

" **घरौंदा** " की नायिका छाया भी जीवन में आनेवाली मुसीबतों का सामना करने में विश्वास रखनेवाली युवती है । वह अपने ही दफ्तर में काम करनेवाले सुदीप से प्यार करने लगती है । दोनों शादी के अटूट बंधन में बँधने के लिए लालायित हो उठते हैं । प्रस्तुत कथन के बारें में डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी कहते है " दोनों की उमर शादी की होकर भी वे शादी इसलिए नहीं कर पाते कि उनका अपना घर नहीं हैं ।"[4] सुदीप को तो बंबई जैसे शहर में खुद का घर होना नामुमकीन -सा लगता है तब छाया ही उसे हौसला देते हुए कहती है -" हम लोग पैसे बचाएँगे , मैं बचाऊँगी, तुम बचाओगे, एक-एक पैसा । क्या हम जैसे क्लर्कों ने कभी फ्लैट नहीं खरीदा ? हम लड़ेंगे, जूझेंगे, लड़ने से पहले ही शिकायत क्यों ।"[5] और दोनों अपनी तनख्वाह से घर के लिए पैसे बचाना शुरू कर देते हैं । यहाँ पर छाया में वही संघर्षशील वृत्ति दिखाई देती है , जो हर इन्सान में मुसीबतों से लड़ने के लिए बेहद जरूरी है ।

" **रक्तबीज** " नाटक के पूर्वार्ध की नायिका सुजाता का पति ऐसा इंसान है, जो नौकरी में तरक्की पाने के लिए अपनी पत्नी को बॉस के साथ नाजायज संबध रखने के लिए मजबूर करता है । सुजाता को ऐसे अनैतिक रास्ते पसंद नहीं है पर उसका मानना है कि जिंदगी में जो भी स्थिति आये उससे पीछा छुड़ाने से अच्छा है उससे लड़ा जायें । इस संदर्भ में उनका अपने मानस से यह कहना -" यह तो एक लडाई है, मानस ! अब मैदान में आ ही गए तो डर किस बात का ।"[6] सुजाता के प्रतिकुल परिस्थितियों से जुझने की वृत्ति को दर्शाता हैं ।

तो उत्तरार्ध की नायिका ललिता को जब पता चलता है कि उसके पति डॉ.शंतनु का ग्यारह साल मेहनत कर किया संशोधन उसके बॉस डॉ.गोयल ने अपने नाम से छपवाया है, तो वह इस धोखे को सहन नहीं कर पाती । डॉ. शंतनु तो इस धोखे से आत्महत्या करना चाहता है पर ललिता उसे रोकती । उसे धिक्कारते हुए कहती है -" हर बुध्दिवादी चोर की तरह लडाई के मैदान से इसी तरह खिसक जाता है । सच्चाई कैसे आएगी सबके सामने । जाओ , उसकी हत्या करो और फिर चीखकर कहो कि तुमने की हैं उसकी हत्या ।"[7] इस तरह हमें नजर आता है कि ललिता अपने पति को डॉ. गोयल की हत्या करने के लिए उकसाती है । उसका मानना है कि इस अन्याय का विरोध न किया गया तो ऐसे और शंतनु आत्महत्या कर लेंगे और समाज उनकी दखल कभी न ले पायेगा ।

" **अरे ! मायावी सरोवर** " की नायिका रानी सुजाता भी जो केवल घर-गृहस्थी सँभालती आयी है उस पर राजा इल्वलु के स्त्री बनने पर सारे राज्य की जिम्मेदारी आ पड़ती है तो वह जरा भी विचलित नहीं होती । वह अकेली राज्य वापस लौटती है और सारा राजशासन मुसीबतें आने के बावजूद कुशलतापूर्वक चलाती है । रानी सुजाता की संघर्षशील वृत्ति के कारण ही वह इस विचित्र स्थिति का सामना कर पायी है ।

" **पोस्टर** " की नायिका चैती की डयूटी गाँव का जमींदार पटेल अपनी हवेली पर लगता है तो चैती उसका विरोध करती है । वह जानती है कि हवेली में डयूटी करना याने पटेल की रखैल होना,जो उसे मंजूर नहीं । इसमें उसका पति भी चैती का पूरा-पूरा साथ देता है । " चैती हवेली नहीं जायेगी " इस आशय के पोस्टर पटेल के कारखाने में लगायें जाते है । जब पटेल यह पोस्टर देखता है तो बहुत गुस्सा हो जाता है । पटेल कल्लू को जब मारने लगता है तब चैती आगे बढकर पटेल के मुँह पर थूक देती है । चैती सीधे-सीधे पटेल से दुश्मनी मोल लेती है । इससे ही उसकी संघर्षशीलवृत्ति का पता चलता है, जो अपने उपर हो रहे अन्याय का विरोध करती हुई नजर आती है ।

" **राक्षस** " की नायिका श्वेतादेवी भी संघर्षशील नजर आती है । उसके गाँव को तहस-नहस करने के लिए आ रहे राक्षस से समझौता करना श्वेतादेवी को मंजूर नहीं । वह गाँव के युवाओं में संगठन निर्माण कर उन्हें राक्षस के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार करती है । जिस वजह से आखिर में श्वेतादेवी और गाँव के बच्चे राक्षस के प्रतिनिधी रणछोड़दास को मारने में सफलता हासिल करते हैं। जो केवल श्वेतादेवी ने राक्षस के खिलाफ लडने के लिए बच्चों को दिये हुए प्रशिक्षण का ही परिणाम है।

" **चेहरे** " की नायिका वेश्या व्यवसाय कर रोजी - रोटी कमाती हुई नजर आती है जो अध्यापिका है । जब उसको समाजसुधारक भरोसे जी का साथ मिलता हैं तो वह उनके साथ वेश्या व्यवसाय छोड़कर बेझिझक निकल पड़ती है । अब तक कमाएँ हुए सारे पैसे, गहने वह भरोसे जी को गाँव में स्कूल और आश्रम खोलने के लिए देती है । अत : इससे पता चलता है कि, अध्यापिका एक अच्छी जिंदगी जीने की चाह रखती है और जब उसे यह मौका भरोसे जी के रूप में मिलता है तो बडे साहस के साथ वह इसे हासिल करती है ।

" **कोमल गांधार** " की नायिका गांधारी भी उसके साथ किये गये धोखे के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों को दंडित करने की मनोकामना ली हुई नजर आती है । धृतराष्ट्र के अंधेपन की बात से अनजान रख उसे विवाह के लिए हस्तिनापुर लाया जाता है तो इस धोखे से वह व्यथित दिखाई देती है । इस संदर्भ में गांधारी का अपने दासी से यह कहना -" इन्हें अनुभव करा सकती हूँ कि स्त्री पर

अन्याय करने का नैसर्गिक अधिकार इन्हें प्राप्त नहीं है । इन सब को अपने अपराध की आग में तो जला सकती हूँ ।"[8] उसके इस कथन में उसकी संघर्षशील वृत्ति का दर्शन होता है ।

अतः शेष जी ने ज्यादा तर नायिकाओं के जरिए प्रतिकुल परिस्थितियों से अंत तक जूझने की स्त्री की वृत्ति को उद्घाटित किया है। इससे यह पता चलता है कि शेष जी स्त्री के शक्ति पर विश्वास रखते थे, उसे भली -भाँति उन्होंने पहचाना था जिसकी अभिव्यक्ति अपने नाटकों के द्वारा उन्होंने की है।

3:2 पतिनिष्ठ नायिका :

भारतीय संस्कृति में विवाह बंधन को असामान्य महत्व प्राप्त है । यह ऐसा पवित्र बंधन है जिसमें केवल पति-पत्नी ही नहीं बल्कि दो कुल के लोग एक-दूसरे से आजन्म जुड़ जाते है । भारतीय संस्कृति में पाश्चात्य संस्कृति के मुकाबले एक पति और एक पत्नी व्यवस्था को ज्यादा महत्व दिया गया है । पत्नी का आजन्म अपने पति से और पति का आजन्म अपनी पत्नी से निष्ठा बनाए रखना नैतिकता का लक्षण माना है । शेष के जिन नाटकों नायिकाएँ विवाहित है उनमें बहुत सी नायिकाओं में यह विशेषता हमें नजर आती है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " नाटक की नायिका ललिता अपने पति से बेहद प्यार करती है । उनके आर्थिक हालात बहुत ही बुरे है फिर भी ललिता अपनी गृहस्थी को बड़ी निष्ठा से चलाती हुई दिखाई है। उन्होंने आर्थिक कठिनाइयों के कारण छः महिने का किराया नहीं दिया है, तो मकान मालिक उनकी इसी मजबुरी का फायदा उठाना चाहता है । वह अपने मुंशी द्वारा ललिता को प्रलोभन दिखाकर अपने जाल में फँासने की कोशिश करता हुआ दिखाई देता है । उसी के तहत एक बार मुंशी ललिता को मकान मालिक ने दिये हुए मोती के कंगन लेने को कहता है तो ललिता क्रोधित होकर मुंशी से कहती है ---" मुंशीजी मैं ऐसे कंगनो पर थुकती हूँ । मेरा पति ही मेरे सौभाग्य का सबसे बडा कंगन है ।"[9] इसतरह वह मुंशी को मुहँ तोड़ जवाब देती है । यहाँ पर ललिता की पतिनिष्ठता ही नजर आती है जो अपने पति के अलावा दूसरे मर्द के बारे में सोच भी नहीं सकती ।

" **रत्नगर्भा** " की नायिका इला के सामने लंदन से लौट रहे पति का सामना करना बड़ा कठीन हो रहा है क्योंकि उसे आशंका है कि जब सुनील उसका झुलसा हुआ कुरूप चेहरा देखेगा तो उससे घृणा न करने लगे ।

इसी से व्यथित हो इला भगवान से यह प्रार्थना करते हुए नजर आती है कि," आज मेरे सामने जीवन -मरण का प्रश्न है,भगवन बस इतनी कृपा करो कि मेरे पति का प्रेम मुझे मिलता रहे।"[10]

इसी से पता चलता है कि इला के लिए उसका पति ही सब कुछ है और पति का प्यार ही उसकी जिंदगी है ।

दूसरी तरफ " **तिल का ताड़** " की नायिका मंजू को परिस्थितिवश अंनजान युवक प्राणनाथ के घर में उसकी बीवी होने का नाटक करते हुए रहना पड़ता है, तो इस बात की जानकारी अपने पति अजय को तुरंत पत्र लिखकर देती है । पर प्राणनाथ मंजू के विवाहीत होने के बात से अंनजान है । वह इस नाटल के दौरान मंजू की तरफ आकर्षित हो उसके सामने शादी का प्रस्ताव भी रखता है । तो मंजू स्पष्ट शब्दों में कहती है कि, " ... मैं आपको सहानुभूति की दृष्टि से देखती हूँ, यदि आप इस प्रकार भावुकता से प्ररित होकर अंटशंट बकेंगें तो मेरी सहानुभूति खो बैठेंगे ।" [11] यहाँ पर मंजू हर स्थिति में अपने पर संयम रखते हुए अपने पति से निष्ठा बनाये रखती हुई नजर आती है ।

" **बिन बाती के दीप** " की नायिका विशाखा को यह पता चलने पर कि उसके पति शिवराज ने उसके साथ धोखा किया है । उसके लिखे सारे उपन्यास अपने नाम से छपावकर खुद दुनिया का महान लेखक बन गया है तो भी विशाखा शिवराज को माफ कर देती है । वह मानती है कि पति-पत्नी तो एक इकाई होते है । उनमें तेरा -मेरा कुछ नहीं होता, जो भी है वह अपना होता है । अतः शिवराज के विश्वासघात को जानकर भी विशाखा की उसके प्रति निष्ठा कम नहीं होती । इसी निष्ठा के कारण विशाखा को शिवराज ने उसके प्रति किया यह आचरण गलत नहीं लगता ।

" **बाढ़ का पानी** " की नायिका लछमी भी अपनी गृहस्थी बड़ी लगन से चलाती हुई नजर आती है । पति कल्लू और बेटा नवल के साथ वह खुशी से अपने घर-संसार में रहती है । छीतू और लछमी में होनेवाले प्यार के अटूट रिश्ते के कारण ही आर्थिक अभावों पर भी वह अपनी जिंदगी खुशहाली से जीते हुए नजर आते हैं । लछमी ने छीतू का हर पल साथ निभाया है और अपने पत्नी और माँ के कर्तव्यों को पूरा किया है ।

" **एक और द्रोणाचार्य** " की एक नायिका लीला अपनी अभावग्रस्त गृहस्थी नाखुशी से चलाते हुए नजर आती है क्योंकि उसकी सास कैंसर से पीड़ित अस्पताल में है तो विधवा ननद को हर महिने मनोऑर्डर भेजना पड़ता है और यह सब पति अरविंद की कमाई में बड़ी मुश्किल से हो पाता है । इसी कारण लीला को अपनी गृहस्थी से शिकायत है पर फिर भी वह अपने पति का साथ निभाते हुए नजर आती है ।

उसी तरह " **एक और द्रोणाचार्य** " की दूसरी नायिका कृपी की भी यही स्थिति है । कृपी की गृहस्थी भी अभावों से ग्रस्त है । वह अपने बेटे को दूध तक पिला नहीं सकती क्योंकि घर में दूध ही नहीं है। पर उसने अपने पति का साथ नहीं छोड़ा है ।

अतः बडी कठिनाईयाँ उठाते हुए वह अपनी गृहस्थी चलाते हुए नजर आती है ।

" घरौंदा " की छाया भी मि.मोदी से शादी करने के पश्चात छल नहीं कर पाती । वह बीमार मोदी की दिलो-जान सेवा करती हुई नजर आती है । मि.मोदी को समय पर दवाइयाँ देना, सिगरेट,शराब पीने ना देना, खाने में परहेज का ध्यान रखना आदि बातों का का पूरी निष्ठा से ध्यान रखते हुए दिखाई देती है । जिस कारण मि.मोदी की सेहत में सुधार होने लगता है । अतः शादी के पश्चात छाया अपने पति से पूरी निष्ठा बनाये रखती हुई नजर आती है । उसके लिए उसका पूर्व प्रेमी अब केवल परिस्थितियों से जूझनेवाला इंसान हैं ।

" अरे ! मायावी सरोवर " की नायिका रानी सुजाता राजा इल्वलु के स्त्री बनने पर अपनी गृहस्थी के साथ-साथ बड़ी कुशलतासे राज्य का शासन भी चलाते नजर आती है । वह अपने पति के यादों के सहारे ही अपना जीवन व्यतित करते हुए दिखाई देती है । पर दूसरी तरफ स्त्री बना राजा इल्वलु अपनी यात्रा के दौरान समाधिस्थ ऋषी की तरफ आकृष्ट हो उसके साथ अपनी गृहस्थी बसाता है । उन्हें कुमार नाम का पुत्र भी होता हैं । लेकिन रानी सुजाता अपने पति के याद में राज्य का शासन और जिम्मेदारियाँ निभाती हुई नजर आती है । जिससे उसकी पतिनिष्ठता का पता चलता है।

वैसे ही **" रक्तबीज "** उत्तरार्ध की नायिका ललिता अपने पति से बेहद प्यार करती हुए दिखाई देती है । वह अपने पति की अनुसंधान की रूचि को जान उसमें अपना सहयोग देते हुए नजर आती है । इसपर डॉ. सुनीता मंजनबैल का कथन दृष्टव्य है .." उसकी साधना में ललिता भी दिन - रात जाग -जागकर, अपनी निजी आशाओं को त्यागकर सहयोग देती है ।"[12] ललिता ने पति के अनुसंधान में बाधा न आये इसलिए पिछले ग्यारह सालों से अपनी मातृत्व की इच्छा को दबाए रखा है । ललिता पति के खुशी में ही अपनी खुशी मानती है । इससे पता चलता है कि, ललिता की सारी इच्छा - आकांक्षाए अपने पति से जुड़ी हुई है ।

" पोस्टर " की नायिका चैती भी पतिनिष्ठ स्त्री है । जब उसे पता चलता है कि उसकी ड्यूटी पटेल ने हवेली पर लगा दी है तो उसका वह कड़ा विरोध करती है । वह जानती है कि हवेली पर ड्यूटी करना याने पटेल की रखैल होना । चैती अपने पति कल्लू को साफ-साफ कह देती है कि वह हवेली कभी नहीं जायेगी । कल्लू भी इसमें चैती का पूरा साथ देता है । दोनों मिलकर पटेल को अपना विरोध दर्शाने के लिए " चैती हवेली नहीं जायेगी " लिखे हुए पोस्टर पटेल के कारखाने में लगाते है । इससे पता चलता है कि एक - दुसरे के प्रति निष्ठता के भावना के कारण ही चैती और कल्लू ने पटेल जैसे खतरनाक आदमी से दुश्मनी मोल लेने का साहस किया है ।

" **कोमल गांधार** " में दिखाई देता है कि गांधारी के साथ किये गये कपट. के लिए धृतराष्ट्र को क्षमा नहीं कर पाती । जिस कारण उसके और धृतराष्ट्र के बीच दुराव पैदा होता है । पर धृतराष्ट्र को चाहिए था एक ऐसा साथी जो उसको समझ सके । जिसके साथ मिलकर वह अपने जीवन का फैलाव कर सके । लेकिन गांधारी उसके साथ हुए धोखे का एक जिम्मेदार धृतराष्ट्र को भी मानती है । जिस कारण वह धृतराष्ट्र को स्वीकार नहीं पाती । इसलिए जयदेव तनेजा कहते है "गांधारी के उपेक्षा एवम् तिरस्कार धृतराष्ट्र को एक दासी के निकट ले जाता है ।"[13] इस बात को गांधारी भी जानती है । पर जब राज्य के वारिस की बात बलवति होती है तो धृतराष्ट्र अपना अधिकार जताने के लिए गांधरी के पास आता है । तो गांधारी बिना कुछ विरोध किये धृतराष्ट्र से कहती है -" इस शरीर से आप एक शरीर ही तो उत्पन्न करना चाहते है न, तो कीजिए ना । शरीर अपना धर्म जरूर निबाहेगा, महाराज । इसमें इतनी यातना सहनें की जरूरत ।"[14] इस तरह गांधारी धृतराष्ट्र के सामने अपना निर्जीव समर्पण करते हुए नजर आती है । यही परंपरा हमें हिंदू स्त्रियों में भी देखने को मिलती है जो अपने पति के अनैतिक संबधों को जानते हुए उसका विरोध नहीं कर पाती तथा खुद पति के साथ अपनी निष्ठता पूरी ईमानदारी के साथ बनाए रखती है ।

इन नायिकाओं के जरिए शेष जी ने भारतीय स्त्री के पतिव्रता रूप को अंकित किया है तथा उसे अपने नाटकों द्वारा अभिव्यक्ति देकर समाज के सामने उसके इस रूप की विविध कोनों से पहचान करायी है ।

3:3 कर्तव्यनिष्ठ नायिका :

जीवन में हर इंसान को अनेक कर्तव्यों को निभाना पड़ता है । हर व्यक्ति किसी का बेटा या बेटी, भाई या बहन,पति या पत्नी, माँ -बाप इन रिश्तों से बँधा होता है । यह भूमिकाएँ निभाते हुए उसे जिस तरह कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं वैसे ही कुछ कर्तव्यों को निभाना पड़ाता है । यह हर व्यक्ति पर निर्भर होता है कि वह अपने कर्तव्यों को कितनी दृढ़ता से निभा पाता है । हर व्यक्ति सभी कर्तव्यों को पूरी तरह निभा पाता ही है ऐसा नहीं । शेष जी के नाटकों की नायिकाएँ भी अपने कुछ कर्तव्यों को निभा पायी तो कुछ कर्तव्यों को निभा नहीं पायी है । अतः हमने यहाँ उनकी चर्चा की है जिन्होनें अपने कर्तव्यों को निभाने की कोशिश की है, साथ ही निभाया भी है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " की नायिका ललिता अपने कर्तव्यों को सजगता से निभाते हुए नजर आती है । उसका मूर्तिकार और चित्रकार पति शेखर अपनी कला को बेचकर पैसा कमाना नहीं चाहता जिस कारण उनके आर्थिक हालात बहुत ही खराब है । पर ललिता सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ सकती । वह जानती है कि, गृहस्थी को चलाने के लिए पैसों की बहुत जरूरत है । वह शेखर को उसकी

जिम्मेदारियों से आगाह करना अपना कर्तव्य मानती है । वह शेखर को कहती है कि, " तुम केवल चित्रकार या मूर्तिकार ही नहीं हो , तुम एक गृहस्थ भी तो हो, तुम्हारी पत्नी है, तुम्हारी जवान अविवाहित बहन है, इसके साथ रोज - रोज की जरूरतें हैं ।" [15] अतः ललिता शेखर को उसकी जिम्मेदारियों के प्रति सचेत करती हुई नजर आती है ।

" **रत्नगर्भा** " की इला भी अपने कर्तव्यों के प्रति सजग दिखाई देती है । जब की इन्हीं कर्तव्यों को निभाते हुए उसके सामने अपने लंदन से डॉक्टर बनकर लौट रहे पति का सामना करना एक दुविधा बन गयी है । क्योंकि परदेस गये अपने पति के अध्ययन में बाधा न आये इसलिए स्टोव्ह फटकर जो दुर्घटना उसके साथ हुई थी उसकी खबर वह सुनील को नहीं देती । उसे मालूम था की यह खबर सुनकर सुनील बीच में ही अध्ययन छोड़ उसे देखने आता । मरते-मरते वह बच जाती है पर इससे वह बदसूरत हो जाती है । जब इला की बहन माया उसे कहती है कि, उसने दुर्घटना की खबर सुनील को पहले बता दी होती तो आज यह दुविधा पैदा ही ना होती । तब इला माया से कहती है --- " माया मैं औरत होने के साथ एक पत्नी भी हूँ । यदि स्त्री के अधिकारों पर मैं हक रखती हूँ तो पत्नी के कर्तव्य भी मुझे ही निबाहने होंगें ।"[16] इससे पता चलता है कि इला ने अपने प्रति कठोर बनकर अपने कर्तव्यों को निभाया है ।

" **तिल का ताड़** " की नायिका मंजू को जब परिस्थितिवश विवाहित होते हुए भी दूसरे आदमी की बीवी होने का नाटक करते हुए उसके घर में रहना पडता है । तब मंजू इस बात की जानकारी पत्र लिखकर अपने पति अजय को दे देती है । यहाँ मंजू अपने पत्नी के कर्तव्यों को नहीं भूली है । वह जानती है कि, पत्नी होने के नाते अपने पति को अपने बारे में सब जानकारी होना आवश्यक है । मंजू को इसी कर्तव्य तत्परता के कारण जब मकान मालिक धन्नामल, प्राणनाथ के पिता गयाप्रसाद और बनारसीदास उस पर कलंकित स्त्री का आरोप लगाते है तो वह सबको मुँह तोड़ जवाब देती है । तभी उसका पति अजय वहाँ आकर सबको बताता है कि, किन हालातों में उसे यह नाटक करना पड़ा । मंजू की इसी कर्तव्य तत्परता के कारण उसका संसार तो बचता ही है साथ ही प्राणनाथ भी अपनी प्रेमिका रंजना से शादी कर पाता है ।

" **बिन बाती के दीप** " की नायिका विशाखा जो अंधी है पर प्रतिभाशाली लेखिका है, वह अपने कर्तव्यों के प्रति भली-भाँति सजग दिखाई देती है । जब उसे पता चलता है कि उसके शहर में अंधे बच्चों के लिए स्कूल खुल रहा है और उसके लिए चंदा भी इकठ्ठा किया जा रहा है तो विशाखा उन बच्चों के लिए कुछ करना चाहती है। वह अपने नये उपन्यास की सारी रायल्टी उस संस्था को दे देती है।

इस संदर्भ में उसका अपने पति शिवराज से यह कहना ----- "इस नये उपन्यास की पूरी रायल्टी मैं उस संस्था को देना चाहती हूँ।"[17] समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठता को दर्शाता है।

" **बाढ़ का पानी** " की नायिका लछमी भी पहले गाँववालों से इसलिए रूष्ठ दिखाई देती है कि, संकट के समय में भी उन्होंने जात-पाँत को ना भूलाकर उनके मद्द के लिए गये उसके बेटे नवल को नीची जाति का कहकर मारा है। इससे व्यथित हो लछमी अपने बेटे नवल को घर से बाहर न निकलने की कसम देती है। तथा गाँववालों से हमारा कुछ लेना-देना नहीं कहकर रोष भी प्रकट करती है। पर जब लछमी को पता चलता है कि, बाढ़ से बचने के लिए गाँव के लोग उनके टीले पर आ गये तो वह पिछली सारी बातें भूल जाती है। वह गाँववालो की मद्द करने के लिए खुद निकल पडती है। इस संदर्भ में उसका यह कहना - " चन्दा को दाल दे आऊँ , बच्चों के ढाढ़स बँधा आऊँ -- हे भगवान आज हमारे यहाँ दसियों मन अनाज होता ,सैंकडों कम्बल होते तो।" [18] उसका यह कथन उसली इंसानियत को दर्शाता तो है ही तथा उसकी कर्तव्यनिष्ठता को भी जाहिर करता है।

" **बंधन बंधन अपने अपने** " की नायिका चेतना पॅरिस से लौटने के बाद बीमार पड़े डॉ जयंत की दिले-जान से सेवा करती है तथा उसकी तीमारदारी से डॉ जयंत जल्दी ठीक हो जाते है। यह सब करना चेतना अपना कर्तव्य समझती है क्योंकि वह डॉ जयंत के छोटे भाई अनादि से प्यार करती है। वह डॉ जयंत के घर को अपना घर और वहाँ के लोगों को अपने लोग समझती है। इसी कारण उस घर के प्रति अपना कर्तव्य निभाती हुए नजर आती है।

" **खजुराहो का शिल्पी** " की शास्त्र, नृत्य,संगीत में निपुण नायिका अलका राजा यशोवर्मन की पालित कन्या है। वह अपने पिता राजा यशोवर्मन और माँ रानी पुष्पा की लाडली बेटी है। अलका दोनों का बड़ा आदर करते हुए दिखाई देती है। जब वह मूर्तीकला और चित्रकला सीखना चाहती है तो पहले वह अपने पिता की आज्ञा लेते हुए दिखाई देती है। इसीसे पता चलता हैं की अलका अपने कर्तव्यों के प्रति सजग है जो जानती है कि, माता - पिता की आज्ञा लेना आवश्यक है।

" **कालजयी** " नाटक की नायिका पुरबी "प्रजातंत्र " दल की ऐसी सदस्या है, जो अपने कर्तव्यों को पूरा करते वक्त उसमें व्यवधान बननेवाले अपने प्रियतम को भी मौत के घाट उतारने में हिचकिचाती नहीं। जब अन्यायी राजा कालजयी को मौत के घाट उतारने के लिए पुरबी का प्रेमी वसुमित्र कालजयी की मदिरा में विष मिला रहा होता है तो पकड़ा जाता है। तब कालजयी पुरबी के हाथों से वसुमित्र को विषमय मदिरा पिलाने को कहता है। तो पुरबी देश के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए वसुमित्र को विषमय मदिरा पिलाती है। यहाँ हमें यह नजर आता है कि देश के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए पुरबी ने अपने प्यार का भी बलिदान दिया है।

" घरौंदा " की छाया भी अपने घर के खराब आर्थिक हालातों को जानकर उसे बेहतर बनाने के लिए नौकरी करती हुई नजर आती है । तभी उसी कंपनी में काम करनेवाले सुदीप से प्यार हो जाने पर अपना घर बसाने के लिए पैसों को इकठ्ठा करने में मदद करते हुए दिखाई देती है । लेकिन हर वक्त की मुसीबतों के कारण उनका घर नहीं बन पाता । परिस्थितिवश छाया को अपने ही फर्म के मालिक मि.मोदी से शादी करनी पड़ती है । मिसेस मोदी बनने के बाद भी वह अपने कर्तव्यों को भली -भाँति निभाती है । वह दिल के मरीज पति की दिलो-जान से सेवा करके उसे मौत के मुँह से बचा लाती है । इससे पता चलता है कि, छाया ने अपने बेटी के कर्तव्यों को और मि.मोदी से शादी होने के बाद पत्नी के कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाया है ।

" अरे ! मायावी सरोवर " की नायिका रानी सुजाता अपने घर के कामों में इतनी व्यस्त दिखाइं देती है कि उसे एक पल की भी फुरसत नहीं । तो दूसरी तरफ राजा इल्वलु के पास कोई काम नहीं है जिससे ऊब कर वह शबरीनरायन तीर्थ रानी को ले जाता है । पर रास्ते में ऐंद्रजालिक सरोवर में नहाने से राजा इल्वलु स्त्री बन जाता है । तब रानी सुजाता अकेले ही राज्य का कार्यभार सँभालती है । अतः रानी सुजाता जब केवल गृहस्थी देखा करती थी तब भी अपने कर्तव्यों को पूरी तरह निभाती है और जब परिस्थितिवश उस पर शासन की जिम्मेदारी आ पड़ती है तो यह कर्तव्य भी बड़ी सक्षमता से निभाती हुई नजर आती है ।

"रक्तबीज " नाटक के पूर्वाद्ध की नायिका सुजाता भी दंतमंजन और मालिश का तेल बनानेवाली कंपनी में माहवार चार सौ रूपये नौकरी कर अपनी सारी कमाई विधवा भाभी तथा उसके बच्चों के लिए भेजते हुए नजर आती है । अतः उसने अपने पत्नी के कर्तव्यों के साथ साथ विधवा भाभी के घर की जिम्मेदारी ले मायके के प्रति कर्तव्यों को भी निभाया हुआ नजर आता है ।

तो उत्तरार्ध की नायिका ललिता भी ऐसी स्त्री है जिसने अपने पति की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए ग्यारह साल से अपनी मातृत्व की इच्छा को दबाए रखा है । वह पति की इच्छा को पूरा करना अपना कर्तव्य माननेवाली स्त्री है । इसी कारण जब उसका पति डॉ.शंतनु ललिता को अपने बेटे को वैज्ञानिक बनाने की ख्वाईश को सुन कहता है कि, तुम्हारी तरह और एक जिंदगी बेकार जायेगी । तो ललिता उसे कहती है --"--- मैं हमेशा अनुभव करती रही हूँ कि मैं तुम्हारी रिसर्च असिस्टेंट हूँ .. एक ऐसा संवाद स्वर जो कहीं बजता रहता है ...एक अनचीन्हे -अनसुने राग -सा । तुम्हारी सार्थकता ही कहीं मेरी कमाई है ।" [19] इससे पता चलता है कि ललिता भी अपने पति के सुख में ही अपना सुख माननेवाली है तथा अपने पत्नी के कर्तव्यों को पूरी तरह निभाती हुई दिखाई देती है ।

" **पोस्टर** " की नायिका चैती अपने पति का हाथ बँटाने के लिए पति के साथ पटेल के खेती कारखाने में काम करते हुए नजर आती है । अत : चैती घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ आर्थिक जिम्मेदारियों को भी निभाती हुई दिखाई देती है ।

" **राक्षस** " की नायिका श्वेतादेवी भी उसके के गाँव तरफ अपने विध्वसंक कदम बढ़ाते हुए आ रहे राक्षस के खिलाफ गाँव के युवकों को उससे लड़ने के लिए प्रशिक्षित करती हुई दिखाई देती है । उसकी इसी कर्तव्य निष्ठता के कारण अंत में गाँव की नयी पीढ़ी के बच्चे राक्षस से बच पाते है ।

" **चेहरे** " में भी इसीप्रकार की नायिका अध्यापिका है । जो अपना वेश्या व्यवसाय छोड़कर नयी जिंदगी की शुरूआत करती है तो अपना सारा जीवन दूसरों के लिए जीने का संकल्प करती है । वह गाँव के आश्रम तथा स्कूल में बच्चों को पढ़ाने का कार्य शुरू करती है और उसे पूरी तरह ईमानदारी से निभाते हुए भी दिखाई देती है ।

इससे पता चलता है कि शेष जी ने स्त्री जीवन की जिम्मेदारियों को, कर्तव्यों को भली-भाँति समझा था । जिसकी बखूबी अभिव्यक्ति वे अपने नाटकों के जरिए कर पायें । इसी कारण समाज के सामने स्त्री की सक्षमता को उजागर करने में सफल हुए हैं ।

3: 4 क्षमाशील नायिका :

शेष जी ने नारी के इस महत्वपूर्ण गुण का अपने नाटको में बखूबी चित्रण किया है । क्षमाशीलता का दूसरा नाम स्त्री को माना जाता है । हिंदू संस्कृति में तो ज्यादातर औरतें स्वभाव से क्षमाशील ही दिखाई देती है जो समझौता करने में विश्वास रखती है ।

" **मूर्तिकार** " नाटक की नायिका ललिता को अपनी ननद नीलू के गलती का पता चलता है तो वह नीलू से पूरी हमदर्दी रखती हुई नजर आती है । नीलू अपने स्त्री मर्यादा लाँघकर अपने प्रेमी सतीश के बच्चे की माँ बननेवाली है । यह सच्चाई पता चलने पर सतीश का उसे अपनाने से इंकार करने पर भी ललिता ही उसे आधार देती हुई दिखाई देती है । ललिता का नीलू से यह कहना - " नीलू तू अच्छी है तो हमारी है बुरी है तो भी हमारी है ।" [20] उसकी क्षमाशील वृत्ति को दर्शाता है जो, नीलू के गलती को क्षमा कर उसे ढाढ़स बँधाती है ।

" **रत्नगर्भा** " की नायिका इला भी अपने पति को उसके कुरूप बनने पर उसके साथ किये गये बर्ताव के लिए क्षमा करते हुए दिखाई देती है । इला सुनील के शराबी, जुआरी, वेश्यागामी बन किये गये बर्ताव को भूलाकर नये सिरे से जिंदगी शुरू करने की कामना रखती हुई नजर आती है । इतना ही नहीं अपना पैसा भी सुनील को देने में उसे संकोच नहीं होता । उसका सुनील से यह कहना -

"मेरा रूपया तुम्हारा ही है। तुम अपने नर्सिंग होम की पूरी योजना बना लो । मैं तुम्हें रूपये दे दूँगी ।"[21] उसके क्षमाशील वृत्ति के साथ ही उसके भोले पन को भी दर्शाता है ।

" **नयी सभ्यता के नये नमुने** " की नायिकाएँ स्मृति और धरणी को जब पता चलता है कि, कृष्ण ने उनके साथ प्यार का नाटक करके उनसे पैसे लुटे है, तो वे गुस्सा हो होकर उसे पुलिस के हवाले करने की सोचती है । पर जब उन्हें पता चलता है कि कृष्ण ने यह सब अपनी टी. बी. से ग्रस्त बहन के इलाज के लिए किया था, तो दोनों भी कृष्ण को उनके साथ किये गये धोखे के लिए क्षमा करती हुई दिखाई देती है ।

" **बिन बाती के दीप** " में इस प्रकार की नायिका विशाखा दिखाई देती है जो पति शिवराज ने उसके साथ किये धोखे को जानकर भी उससे नफरत या दंडित करने के बजाए क्षमा कर देती है । वह जान जाती है कि, शिवराज ने उसके अंधेपन का फायदा उठाकर उसके लिखे सारे उपन्यास अपने नाम से छपवायें है । साथ ही दुनिया का महान लेखक बन बैठा है । पर विशाखा को शिवराज से कोई शिकायत नहीं क्योंकि वह पति - पत्नी को एक इकाई मानती है । इतना ही नहीं विशाखा को लगता है कि, वह यह उपन्यास शिवराज के सहारे ही लिख पायी है । अतः शेष जी ने विशाखा के माध्यम से ऐसी स्त्री को दर्शाया है जो क्षमाशील के साथ-साथ उदारवृत्ति की भी है । क्योंकि विशाखा अपना नया उपन्यास भी शिवराज के नाम से ही छपवाना चाहती है ।

" **बाढ़ का पानी** " की नायिका लछमी गाँववालों से पहले इसलिए रूष्ठ दिखाई देती है कि, उन्होंने उसके बेटे नवल को इसलिए मारा है कि, वह नीची जाति का होकर उनकी मदद करने आया । पर जब गाँव के लोग बाढ़ से आहत हो उनके टीले पर आसरा लेने लगते है तो लछमी गाँववालो की धृष्टता भूलाकर उन्हें हर प्रकार से मदद करती हुई नजर आती है । लछमी गाँववालों को इस संकट काल में अपने घर में आसरा देती है । अनाज की कमी होते हुए भी खाना देती है । जब उन्हीं की जाति का गनपत लछमी से पूछता है कि अनाज खत्म होने पर आप क्या करोगे ? तो लछमी जवाब देती है - "तब की तब देखी जाएगी । गाँव जिंदा रहेगा तो हम लोग भी जिंदा रहेंगे ।"[22] यह उसके क्षमाशीलता के साथ साथ दूसरों को तहे दिल से मदद करने की वृत्ति को भी दर्शाता है ।

" **घरौंदा** " की नायिका छाया के लिए मि.मोदी से विवाह हो जाने पर उसका प्रेमी सुदीप केवल जिंदगी से जुझनेवाला इंसान रह जाता है । जिसकी वह इंसानियत के नाते मदद करना चाहती है । इसी कारण सुदीप उससे झूठ बोलकर पंद्रह हजार रूपये ले जाता है तो वह उसे दे देती है । इतना ही नहीं जब उसे पता चलता है कि सुदीप को शराब पीकर ऑफिस आने तथा मारपीट करने के कारण नौकरी से निकाल दिया गया है, तो वह मि. मोदी से सुदीप को फिर से नौकरी पर रखने के लिए

कहती है । तब मि.मोदी सुदीप को किसी और जगह नौकरी देने का आश्वासन छाया को देता है । अतः हमें यहाँ दिखई देता है कि सुदीप के गलतियों को क्षमा कर छाया उसकी हर तरह से सहायता करने को कोशिश में लगी हुई है ।

इन नायिकाओं के जरिए पता चलता है कि शेष जी ने स्त्री के क्षमाशील गुण के सकारात्मक पहलू को अपने नाटकों के जरिए उजागर किया है तथा यह बताने कि कोशिश की है कि स्त्री अपनी इस विशेषता से कई लोगों की जिंदगी सँवार सकती है। उन्हें फिर से जीने के लिए हौसला दे सकती है।

3: 5 पति से असीम प्यार करनेवाली नायिका :

शेष जी के जिन नाटकों की नायिकाएँ विवाहित है उनमें से ज्यादातर नायिकाएँ अपने पति से बेहद प्यार करनेवाली नजर आती है तथा सच्चे रूप में अर्धांगिनी दिखाई देती है ।

उनके " **मूर्तिकार** " नाटक की नायिका ललिता अभावग्रस्त गृहस्थी के बावजूद अपने पति शेखर के साथ खुश नजर आती है । उसके घर मैं दाल, चावल तथा आँटा तक नहीं है । वह हर रोज एक ही साड़ी धो -धो कर पहनती है फिर वह अपने पति से रूष्ठ नहीं है । वह पति के हर सुख -दुःख को अपना कर पति को सुख देने की कोशिश करती हुई नजर आती है। जब शेखर उसे कहता है कि वह उसे कुछ भी सुख नहीं दे पाया । तो ललिता कहती है - " धन लेकर क्या खाक करूँगी । जब तुम इन मूर्तियों पर मिट्टी के गहने बनाते हो न, तब मैं उन्हें देखकर खुश हो लेती हूँ । तुम हो फिर मुझे और क्या चाहिए ।"[23] यह उसके शेखर के प्रति अगाढ़ प्यार को दर्शाता है । इसी बलबूते पर ललिता ने हर मुश्किल में अपने पति का पूरा साथ निभाया है ।

"**रत्नगर्भा**" की नायिका इला भी अपने पति सुनील से बेहद प्यार करती है । वह ऐसी स्त्री है जो दुर्घटनाग्रस्त होने से कुरूप बन गयी है । जिस वजह से उससे बेइंतहा प्यार करनेवाले सुनील ने उसकी पूर्णरूप से उपेक्षा की है । सुनील शराबी, जुआरी और वेश्यागामी बन जाता है । फिर भी इला सुनील को इस चारित्रिक पतन से उभारना चाहती है । उसे एक आशा की किरण अपनी बहन माया में नजर आती हैं तो वह माया को अपनी सौत के रूप में अपनाने को तैयार हो जाती है । उसका माया से यह कहना -" मैं अपने पति को पशु बनते नहीं देखना चाहती । वे केवल एक सुंदर स्त्री का प्रेम चाहते हैं । तू निःसंदेह सुंदर है। तुझे पाकर वे अवश्य सुखी हो जाएँगे।" [24] ये उसके उद्गार अपने पति के प्रति असीम प्यार को दर्शाते है ।

" **तिल का ताड़** " की नायिका मंजू भी अपने पति से बेहद प्यार करने के कारण ही प्राणनाथ जैसे युवक के साथ रहते हुए भी उसे अपनी मर्यादा लाँघने नहीं देती । प्राणनाथ ऐसा इंसान है जो रंजना नाम की लड़की से प्यार करता है और उसी से शादी करना भी चाहता है । पर जब मंजू

उसके घर में उसकी बीवी होने का नाटक करते हुए रहने लगती है तो वह उसकी तरफ आकृष्ट होने लगता है । उसी धुन में प्राणनाथ मंजू के सामने शादी की ख्वाईश भी जाहिर करता है क्योंकि वह नहीं जानता कि मंजू विवाहित है । तो मंजू स्पष्ट शब्दों में कह देती है --" देखिए मिस्टर प्राणनाथ, आप फिर प्यार-व्यार की भाषा बोलने लगे । मैं आपको कितनी बार कह चुकी हूँ कि, आप भावुकता में मत बहिए ।"[25] और अपने बारे में सारी जानकारी तथा सच्चाई अपने पति अजय को पत्र लिखकर दे देती है क्योंकि अपने पति से बेहद प्यार करनेवाली मंजू नहीं चाहती कि उसके और अजय के बीच में कोई गलतफ़्हमी निर्माण हो ।

" बिन बाती के दीप " की विशाखा भी अपने पति से बेहद प्यार करती नजर आती है । अंधी है पर प्रतिभाशाली लेखिका है । वह अपने लिखने की प्रेरणा शिवराज को मानती है । पति-पत्नी के संबधो में वह मान-अपमान, अहंकारादि को कतई स्थान नहीं देती । उसके जीवन की एक ही तमन्ना नजर आती है कि वह अपने पति शिवराज को देख लें । उसका शिवराज से यह कहना कि -" अब मेरी केवल एक ही कामना है मुझे मेरी आँखे मिल जाएँ । तुम्हें एक बार देख लूँ ।" [26] उसके शिवराज के प्रति असीम प्यार को दर्शाता है। विशाखा ऐसी स्त्री है जो अपने पति को देवता की तरह पूजती है तथा अपना जीवन पति के जीवन में लीन कर चुकी है ।

" बाढ़ का पानी " की नायिका लछमी भी अपने पति छीतू के साथ अपने घर-संसार में खुश नजर आती है । उसके घर में सुविधाओं की कमी और अभावों की अधिकता है । फिर भी लछमी अपनी छोटी-सी गृहस्थी बड़ी कुशलता से चलाते हुए नजर आती है । उसके घर-संसार में उसका पति छीतू और बेटा नवल है, जिनके साथ वह खुशी से रहती हुई दिखाई देती है ।

" घरौंदा " की छाया भी मि.मोदी से शादी करने के पश्चात उनकी दिलो-जान से सेवा करती हुई नजर आती है। मि.मोदी ऐसा इंसान है जिसे पहले दो हार्ट अॅटॅक आ चुके हैं और तिसरा कभी भी आ सकता है । पर छाया उसकी दवाइयों का, परहेज का पूरा ध्यान रखती है जिस कारण उसकी तबीयत में सुधार होने लगता है । तथा उसमें जीने की उमंग भी निर्माण होती है । छाया उसके पूर्व प्रेमी सुदीप के बार बार मि.मोदी को मार ड़ालने की बात को अमल में नहीं ला पाती क्योंकि वह मि.मोदी को धोखा नहीं देना चाहती। पर जब मि.मोदी को सुदीप ने छाया को लिखे खत को पढ़ने से उसके खिलाफ किये गये षड्यंत्र का पता चलता है तो छाया घर छोड़ने का फैसला करती है क्योंकि वह मानती है कि उसने जिस विश्वास से अपनी पति की सेवा की,उस से प्यार किया उस पर संदेह निर्माण हो चुका है । अतः ऐसे हालातों में यहाँ रहना निरर्थक है । पर मि.मोदी छाया को घर छोड़ने से रोकता है क्योंकि वह छाया से प्यार करता है और छाया के उसके प्रति प्यार को जानता है । तब छाया मि.मोदी से कहती है -

" बस, यही अधिकार चाहिए मुझे तुम्हारा ... शरीर पर ...मन पर ... प्यार की पराकाष्ठा..संपूर्ण स्वीकृति .. संदेह से परे ।" [27]

अत : यहाँ पर पति से असीम प्यार करनेवाली छाया की सेवा सफल हुई नजर आती है ।

" अरे ! मायावी सरोवर " नायिका रानी सुजाता और स्त्री बना उसका पति राजा इल्वलु के सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि राजगद्दी पर किसका पुत्र बैठेगा । क्योंकि अंशुमाली को रानी सुजाता सिंहासन का उत्तराधिकारी मानती है तो स्त्री बना राजा इल्वलु उसके ऋषि के साथ परिणय के बाद जन्में पुत्र कुमार को सिंहासन का उत्तराधिकारी मानता है । तो आखिर में यह तय होता है कि अंशुमाली और कुमार में द्वंद्वं युद्ध करा कर इसका फैसला किया जायें । तब तो यह बात रानी सुजाता और राजा इल्वलु मान लेते है । उन दोनों के बीच युद्ध शुरू होता है तभी वहाँ इंद्र आकर युद्ध को रोकने है । इंद्र स्त्री बने राजा इल्वलु को फिर से पुरूष बनाने के लिए आये हुए होते है । तब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि उसके पुत्र कुमार का क्या होगा? तब रानी सुजाता कहती है --" फिर तो जो इनका बेटा वहीं मेरा बेटा -हम दोनों का बेटा ।"[28] अतः कुछ देर पहले अपने बेटे अंशुमाली को कुमार के साथ द्वंद्वं युद्ध के लिए प्रेरित करनेवाली रानी सुजाता अपने पति राजा इल्वलु को फिर से पाने के लिए उसके बेटे को अपना बेटा मानते हुए नजर आती है । इसी से उसका राजा इल्वलु के प्रति असीम प्यार प्रगट होता है ।

" रक्तबीज " नाटक के उत्तरार्ध की नायिका ललिता अपने पति की संशोधन की रूचि को जान उसके काम में अपना पूरा सहयोग देते हुए नजर आती है । इतना ही नहीं शंतनु ने अपने काम में बाधा न आयें इसलिए बच्चा भी होने दिया है । तो अपने पति की इच्छा के खातिर ललिता ने अपने मातृत्व की इच्छा को ग्यारह सालों से दबाए रखा है । ललिता का अपने पति से यह कहना -"तुम्हारी खुशी में मेरी खुशी ।"[29] उसके शंतनु के प्रति असीम प्यार को प्रगट करता है जिसकी सारी इच्छा - आकांक्षाएँ, खुशियाँ अपने पति से जुड़ी हुई नजर आती है ।

" पोस्टर " की आदिवासी गाँव की नायिका चैती उसकी डयूटी हवेली पर लगाने पर विरोध करती हुई नजर आती है । वह ऐसी आदिवासी स्त्री है जिसने पहली बार पटेल के आदेश को न मानते हुए उसका विरोध किया है । क्योंकि उसके गाँव के लोगों ने इससे पहले कभी पटेल का विरोध नहीं किया है । चैती जानती है कि हवेली पर डयूटी याने पटेल की रखैल बनना जो चैती को कतई मंजूर नहीं । इस नैतिकता की लड़ाई में उसका पति कल्लू भी उसका पूरा साथ देता है । दोनों मिलकर इसका विरोध करते है तो पटेल आगबबूला होकर कल्लू को पीटने लगता है । कल्लू को पीटते देखकर चैती

आपे से बहर हो जाती है और सीधे पटेल के मुँह पर थूक देती है । इसी से ही पता से चलता है कि अपने चरित्र के प्रति जागरूक चैति पति से बेहद प्यार करती है ।

इन नाटकों की नायिकाओं के जरिए शेष ने दांपत्य जीवन पर प्रकाश डाला है । तथा यह बताने का प्रयास किया है कि स्वस्थ दांपत्य जीवन के लिए पति-पत्नी में आपसी प्यार,विश्वास और समझ बेहद जरूरी है।

3: 6 पारिवारिक जीवन में असफल नायिका :

शेष के कुछ नाटकों की नायिकाएँ पारिवारिक जीवन में असफल दिखाई देती है । यहाँ पर अपने पति पर किया गया ज्यादा भरोसा, खुद की गलत सोच तथा पति के प्रति क्षोभ आदि कारण से उनका पारिवारिक जीवन असफल दिखाई देता है । ये नायिकाएँ अपने पारिवारिक स्थितियों को अच्छी तरह सँभल नहीं पायी है, जिस कारण उनका जीवन बिखरा हुआ नजर आता है ।

शेष के " **रत्नगर्भा** " नाटक की नायिका इला अपने पारिवारिक जीवन में असफल दिखाई देती है । उससे बेइंतहा प्यार करनेवाला पति सुनील उसके दुर्घटनाग्रस्त होकर कुरूप बनने पर उससे नफरत करने लगता है । मांसल शरीर तक ही सौंदर्यानुभूति रखनेवाला सुनील कुरूप बनी इला को स्वीकार नहीं कर पाता । सुनील शराबी, जुआरी और वेश्यागामी बन जाता है । सुनील की अत्याधिक कामासक्ति उसे चारित्रिक पतन की ओर ले जाती है। लेकिन इला सुनील को इस पतन से रोक नहीं पाती है । पति के ऐसे आचरण पर वह बहुत दुःखी दिखाई देती पर केवल आँसू बहाने के सिवा कुछ और करने में वो खुद को असमर्थ पाती है । जिस वजह से सुनील की इतनी हिम्मत बढ़ती है कि वह इला को मारकर उसके ऐश्योरन्स के पैसे और उसके मामा के पश्चात मिले पैसों को हासिल करने के लिए उसे स्लो पॉयजन देने में भी नहीं कतराता । अत : यहाँ हमें एक दुर्घटना की वजह से पति -पत्नी के बीच का अटूट प्यार का, विश्वास का बंधन टूटा हुआ नजर आता है ।

" **बिन बाती के दीप** " में भी शिवराज ने अपनी पत्नी विशाखा को धोखे में रखकर उसके लिखे उपन्यास खुद के नाम से छपवाकर विशाखा से विश्वासघात किया हुआ नजर आता है। इतना ही नहीं शिवराज विशाखा की आँखो में गलत दवा डालता रहता हैं ताकि वह अंधी ही बने रहे । दूसरी तरफ इन सब बातों से अनाभिज्ञ विशाखा शिवराज को अपनी लेखनी की प्रेरणा मानती हुई दिखाई देती है । उसे लगता है कि शिवराज के सहारे ही वह उपन्यास लिख सकी है और दुनिया में मशहूर हुई है । पति-पत्नी में आपसी प्यार, एक-दूसरे के प्रति वफादारी का जो रिश्ता होता है उसे शिवराज ने तिलांजली दी हुई नजर आती है । उसने अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए अपनी ही पत्नी का इस्तेमाल किया हुआ नजर आता है। अतः विशाखा असली पारिवारिक सुख से कोसों दूर नजर आती है ।

तो " **एक और द्रोणाचार्य** " की एक नायिका लीला अपने सुविधा भोगी स्वभाव के कारण पति अरविंद को गलत रास्ते पर ले जाती हुई दिखाई देती है । इन गलत रास्तों पर चलने से अरविंद को लोग बेईमान और मौका परस्त समझने लगते है । उस पर कोई विश्वास नहीं करता तो अरविंद इसके लिए लीला को ही जिम्मेदार ठहराता है । अरविंद का लीला से यह कहना -" और बनाओ प्रिंसिपल । कही का नहीं रखा मुझे ।"[30] अरविंद का लीला के प्रति क्षोभ को प्रगट करता है । अरविंद महसूस करने लगता है कि लीला की बात मानकर और अपने आदर्शों से गिरकर वह प्रेसिडेंट के हाथ की कठपुतली बन गया है । उसका अपना कोई आस्तित्व ही नहीं है । अतः सब सुख-सुविधाएँ होने पर भी पति-पत्नी दोनों में हमेशा तणाव बना दिखाई देता है ।

तो " **एक और द्रोणाचार्य** " दूसरी नायिका कृपी की गृहस्थी में भी इसी कारण बिखराव नजर आता है क्योंकि द्रोणाचार्य भरी सभा में द्रौपदी को अपमानित होते हुए देखने की विवशता के लिए कृपी को ही दोषी ठहराते है । द्रोणाचार्य मानते है कि कृपी अगर दरिद्रता से परेशान होकर उसे राजपुत्रों का आचार्य पद ग्रहण करने के लिए मजबूर न करती तो वह राजकीय अन्न की दासता में ना जखड़ते । उसी तरह अश्वत्थामा भी कृपी को ही अपनी स्थिति का जिम्मेदार ठहराता हुआ नजर आता है । उसका कृपी से यह पूछना -"मुझे समझौते की संतान क्यों बनाया तुमने ? "[31] उसके परवरीश को गलत ठहराता है ।

अत : यहाँ लीला और कृपी अपने सुविधा तथा सुरक्षा भोगी वृत्ति के कारण पारिवारिक जीवन मे असफल दिखाई देती है ।

" **रक्तबीज** " नाटक में मि.शर्मा के अतिरिक्त महत्वाकांक्षा के कारण सुजाता का पारिवारिक जीवन असफल दिखाई देता है । मि.शर्मा अपनी पदोन्नति के लिए सुजाता को बॉस के साथ नाजायज संबंध रखने के लिए मजबूर करता है । सुजाता भी पति की इच्छा के आगे झुक जाती है । पर सुजाता को पा लेने के बाद बॉस की उसके प्रति दिलचस्पी खत्म हो जाती है । जिससे पता चलता है कि मि.शर्मा तथा बॉस मि.माथुर ने उसका केवल एक साधन की तरह इस्तेमाल किया है । आखिर में इस स्थिति को सह न पाने के कारण सुजाता मौत को गले लगाती है जहाँ उसके दुःखमय पारिवारिक जीवन का अंत होता है।

" **कोमल गांधार** " के गांधारी का पारिवारिक जीवन भी असफल दिखाई देता है । गांधारी उसे धोखे में रखकर किये गये विवाह के लिए आजन्म भीष्म, धृतराष्ट्र तथा अपने पिता को माफ नहीं कर पाती । वह अपने पारिवारिक जीवन के प्रति उदासीन ही रहती है । इसपर रमेश गौतम कहते है -- "गांधारी ने जीवन में आई समस्याओं को नकारात्मक दृष्टी से लिया,वह खुद भी टूट गई और उसने

दूसरों को भी तोड़ा ।"[32] जिस कारण बड़े होकर दुर्योधन,दुःशासन गांधारी को अपने गलत आचरण का जिम्मेदार मानते हुए नजर आते है। दुर्योधन का गांधारी से यह कहंना - "जीवन भर मना करने के अलावा तूने क्या किया ? तूने हमेशा कहा -यह मत करो वह मत करो ...। "[33] उसके माँ के कर्तव्य की असफलता को दर्शाता है । इसी वजह से आखिर में गांधारी को युद्ध में अपने सौ बेटों को खोना पडता है ।

इस प्रकार शेष ने अपने नाटकों की इन नायिकाओं के माध्यम से पारिवारिक जीवन की असफलता का अंकन कर उसके भयानक परिणामों को उजागर किया है ।

3:7 आशावादी नायिका :

इंसान एक स्वस्थ जिंदगी तभी जी सकता है, जब उसका जिंदगी की तरफ देखने का नजरिया सकारात्मक तथा आशावादी हो । आशावादी इंसान ही जिंदगी में कुछ पा सकता है । शेष के नाटकों की नायिकाएँ भी इसी आशावादी गुण का प्रत्यय हमें कराती है । जिन्होंने अपने साथ-साथ ओरों को भी हौसला, उमंग तथा उत्साह के साथ जिंदगी जीने की प्रेरणा दी है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " की नायिका ललिता जिंदगी को सकारात्मक दृष्टि से देखती है । उसका पति शेखर एक प्रदर्शनी में भेजे चित्र को पुरस्कार तो दूर उसे प्रदर्शनी में ना लगाने की बात से दुःखी होता है । तब ललिता ही शेखर को समझाती हुई नजर आती है कि ---" आज नहीं तो कल तुम्हारा नयापन लोगों की निगाह में जरूर उतरेगा "[34] और ललिता शेखर को हौसला दे फिर से और एक प्रदर्शनी में अपना चित्र भेजने की प्रेरणा देती हुई दिखाई देती है ।

" **रत्नगर्भा** " की नायिका इला अपने शराबी, जुआरी,वेश्यागामी बने पति को फिर से अच्छा इंसान बनाने की आशा रखती हुई नजर आती है । वह जानती है कि सौंदर्यप्रेमी सुनील उसके दुर्घटना से कुरूप बनने की बात को सह न पाने के कारण भटक गया है । इसी कारण जब उसे पता चलता है कि सुनील उसकी छोटी बहन माया से शादी करने की ख्वाईश रखता है । तो इला माया को सुनील से शादी करने को कहती है । इस संदर्भ में इला का माया से यह कहना --"... मेरा पति इस पतन के गर्त से अवश्य ऊपर उठ जाएगा । उसमें इंसानियत की पुनः प्राण-प्रतिष्ठा हो जाएगी ।" [35] उसके आशावादी दृष्टीकोन को दर्शाता जो यह समझती है कि सुनील अवश्य गलत रास्तों पर चलना छोड़ देगा ।

" **बिन बाती के दीप** "की नायिका विशाखा प्रतिभाशाली लेखिका है पर अंधी है ।लेकिन उसका यह अंधत्व जन्म से नहीं है । कॉलेज के दौरान आँखे कमजोर हो जाने कारण उसकी आँखो की

रोशनी अचानक चली गयी है ।फिर भी वह अपने प्रेमी शिवराज से विवाह कर अपनी गृहस्थी बसाती है । वह तीन वर्षों से अंधत्व का शाप झेल रही है और आँखो की दवाइयाँ ले रही है कि कभी तो उसकी आँखे ठीक हो जायेंगी और फिर से इस संसार को देख सकेगी ।

" **बाढ़ का पानी** " की लछमी के गाँव में बाढ़ आने के कारण गाँव तो बह ही जाता है सारी फसल भी बरबाद हो जाती है । सारे गाँववाले इस आपत्ति से चिंतित दिखाई देते है । पर लछमी को आशा है कि फिर से सबकुछ ठीक हो जायेगा । इसी आशावादीता के कारण वह बाढ़ से पीडित गाँववालों को बड़े उत्साह से मदद करती हुई दिखाई देती है ।

" **बंधन अपने -अपने** " की चेतना अनादि से प्यार करती है । उसके अनादि से शादी कर लेने के पश्चात अपने घर-संसार के प्रति कुछ सपने है । वह सपने अनादि से जब यह कहती है -"अपना एक छोटा-सा घर होगा । उस घर के सामने गुलाब और गुलदावदी के फूलों की मैं एक छोटी -सी बगिया लगाऊँगी और लॉन के बीचोबीच एक सूरजमुखी का पौधा होगा,जो सूरज का एकटक देखेगा ।" [36] तब जाहिर होते है । चेतना ने यह सुंदर-सजीले सपने केवल देखें ही नहीं है तो उन्हें पूरा करने की आशा भी रखती हुई नजर आती है ।

" **खजुराहो का शिल्पी** " की नायिका अलका खजुराहो के मंदिर निर्माण में प्रतिदर्श की भूमिका निभाते -निभाते शिल्पी मेघराज आनंद से प्यार करने लगती है । पर शिल्पी " मोह के क्षण " का अनुभव कर चुका है और फिर से उसमें फँसना नहीं चाहता । इसी कारण साक्षात मोह के क्षण को अस्वीकार कर देता है ।इसी कारण अलका जब उसके सामने अपने प्यार को प्रगट करती है तो शिल्पी उसे अस्वीकार कर देता है । तब अलका का शिल्पी से यह कहना - "... मैं सोचती थी कहीं -न-कही तरलता होगी ।"[37] उसकी आशावादीता को दर्शाता है । उसे आशा थी कि मेघराज आनंद कभी न कभी उसके प्यार को समझकर उसे स्वीकार कर लेगा ।

" **कालजयी** " नाटक में दिखाई देता है कि नायिका पुरबी ने अपने देश की स्वतंत्रता की आशा में अपना जीवन आहुति कर दिया है । इतना ही नहीं इस रास्ते पर चलते वक्त उसे अपने प्रियजनों तथा प्रेमी वसुमित्र को भी मौत के घाट उतारना पडता है तब भी वह पीछे नहीं हटती । पुरबी अन्यायी राजा कालजयी को खत्म करने के लिए निर्माण हुए "प्रजातंत्र " दल की सदस्या है । उनकी इस लड़ाई में जब सारी जनता भी उनका साथ देती है। तब पुरबी का आचार्य से कहना --"हमारे स्वप्न पुरे हो रहे हैं आचार्य । जनता अपने अधिकार लड़कर ले रही है । वह एक ऐसे प्रजातंत्र की नींव रख रही है जो अमर होगा ।"[38] उसकी आशा को दर्शाता है । उसे पूरा विश्वास है कि प्रजा और कपटी

राजा कालजयी के संघर्ष से जब जनता के हाथ में राज्य के सूत्र आयेगें तो सच में वह जनता का ही राज होगा जिसे लोग सदियों तक याद करेंगे ।

" घरौंदा " की छाया भी जिंदगी को सकारात्मक दृष्टि से देखनेवाली आशावादी युवती नजर आती है । वह सुदीप से प्यार करती है और शादी भी करना चाहती है । पर मकान के अभाव में वे शादी नहीं कर पा रहे हैं । वह सुदीप को किराये पर मकान लेने की राह सुझाती है । पर बंबई जैसे शहर में कम से कम दस हजार रूपये पगड़ी दिये बगैर मकान नहीं मिल सकता । यह सुदीप को पता चलता है तो वह टूटसा जाता है । पर छाया इन मुश्किलों से लड़ने का हौसला रखती है । उसका सुदीप से यह कहना की -- " मैं नहीं मानती सुदीप कि जिंदगी खत्म हो गई है । केवल मेरा साथ दो, केवल कुछ दिनों की दिक्कत है ।"[39] उसके इसी हौसले को जाहिर करते है । इसी आशावादीता के कारण छाया सुदीप को मुसीबतों से लड़ने के लिए प्रेरणा देती हुई नजर आती है ।

उसी तरह की नायिका ललिता हमें **" रक्तबीज "** में नजर आती है । जो यह सुनने पर की उसके पति डॉ. शंतनु का ग्यारह साल अनवरत किया हुआ संशोधन डॉ. गोयल ने अपने नाम से छपवाया है, शंतनु को डॉ.गोयल की हत्या करने के लिए उकसाती है । पर फिर ललिता यह सोचते हुए नजर आती है कि डॉ. गोयल ने शंतनु का संशोधन चुराया है दिमाग तो नहीं । जिसके सहारे फिर से शंतनु क्रम कर सकता है । इसी उधेड़बुन में वह शंतनु को डॉ.गोयल की हत्या करने से रोकने का निर्णय लेती है । अत : ललिता ऐसी स्त्री है जो इतने बड़े धोखे को सह लेती है तथा उससे भी नवनिर्माण की आशा रखती है।

" पोस्टर " की चैती ऐसी आदिवासी मजदूर स्त्री है। जिसे यह पता चलने पर की उन पर अन्याय हो रहा है वह इसका विरोध करती है । गाँव का पटेल रोजाना चार रूपए मजदूरी के बजाय एक रूपया देता है तो यह जानने के बाद चैती मजदूरों में जागृती निर्माण करती है। वह सारे मजदूरों को मिलाकर संगठन के साथ हड़ताल की तैयारी करती हुई नजर आती है। उसे आशा है कि इसके जरिए पटेल से जरूर मजदूरी बढ़ाकर माँगी जा सकती है । तथा पटेल उनकी माँगे पूरी करेगा ।

" राक्षस " की नायिका श्वेतादेवी भी ऐसी स्त्री है जो उसके गाँव को तहस-नहस करने के लिए आनेवाले राक्षस से लड़ने में विश्वास रखती है । वह जानती है कि राक्षस से समझौता करने के बजाय उससे लड़ा जाये तो उसे हमेशा के लिए खत्म किया जा सकता है । इसी आशा के साथ वह गाँव के बच्चों को राक्षस से मुकाबला करने का प्रशिक्षण देते हुए नजर आती है। आखिर में श्वेतादेवी की यही आशा सच में साकार हुई नजर आती है क्योंकि गाँव के बच्चे राक्षस के प्रतिनिधी रणछोड़दास को मार ड़ालने में कामयाब होते हैं ।

यही बात " **चेहरे** " की नायिका अध्यापिका में नजर आती हैं, जो पहले वेश्या व्यवसाय कर जिंदगी गुजारा करती थी । उसे सौभाग्यवश समाजसुधारक भरोसे जी का साथ मिलने पर वेश्या व्यवसाय छोड़ते हुए नजर आती है । इतना ही नहीं अच्छी जिंदगी जीने की आशा में वह अपना सारा पैसा, गहने भरोसे जी को देती है। उसकी इसी आशा और हौसले के कारण बाकी की जिंदगी वह सम्मान के साथ बच्चों को पढ़ाने का काम करते हुए गुजारते हुए दिखाई देती है। अतः इसी वृत्ति के कारण अध्यापिका वेश्या जैसे नरकीय जिंदगी से निकल कर एक अच्छी जिंदगी जी पाती है ।

इससे हमें पता चलता है कि शेष ने अपनी नायिकाओं के जरिए आशावादी दृष्टिकोन के सकारात्मक पहलु को उजागर किया है । साथ ही हमारी जिंदगी में आशावादीता के महत्व को जाहिर किया है ।

3:8 चरित्र के प्रति सजग नायिका

स्त्री सब कुछ सह सकती है मगर अपने चारित्र के प्रति ऊँगली उठानेवाले व्यक्ति को क्षमा नहीं कर सकती तथा अपने लिए वासना की भावना रखनेवाले इंसान को सहन नहीं कर सकती । अतः शेष जी के नाटकों की नायिकाएँ भी अपने चारित्र पर दाग तथा ऊँगली उठाने की कोशिश करनेवाले इसानों के साथ संघर्ष करती हुई नजर आती है । जैसे -"मूर्तिकार" की ललिता" तिल का ताड़" की मंजू । तो "घरौंदा "की छाया चारित्रिक पवित्रता को महत्व देने के कारण अपने चरित्र के प्रति सजग दिखाई देती है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " की ललिता अपनी चारित्रिक पवित्रता के लिए संघर्ष करती नजर आती है । उसका मकान मालिक छ महिने के किराये को वसूल करने के लिए उसके साथ नाजायज संबध रखने की ख्वाईश जाहिर करता है । तो ऐसी स्थिति में ललिता अपना यह अपमान ना सहते हुए मुंशी को यह कहती है कि -"... दुनिया भर का पूरा सोना इकठ्ठा करके भी ललिता के नख को छुआ नहीं जा सकता "[40] यहाँ पर ललिता उसके चारित्र पर दाग लगाने की कोशिश करनेवाले मुंशी को मुँह -तोड़ जबाब देनी हुई नजर आती है ।

" **तिल का ताड़** " की नायिका मंजू को परिस्थितिवश अनजान युवक प्राणनाथ की नकली बीवी बनकर उसके घर में रहना पड़ता है । तो भी वह अपना संयम बनाये रखती हुई नजर आती है । प्राणनाथ ऐसा इंसान है जो रंजना नामक युवती से प्रेम करता है और उससे शादी भी करना चाहता है । पर मंजू के घर आने पर रंजना को भूल सा जाता है । वह मंजू से इतना प्रभावित होता है कि उसके सामने शादी का प्रस्ताव रख देता है । पर मंजू प्राणनाथ को स्पष्ट शब्दों में सुनाती है - "अच्छा है आपका प्यार...आज मैं हूँ इसलिए रंजना के विषय में आप नहीं सोचते । कल कोई दुसरी आ जाएगी

तो आप मेरे विषय में सोचना बंद कर देंगे । मिस्टर प्राणनाथ,यह प्रेम नहीं यह प्रवृत्ति का व्यभिचार है।"[41] अत : अपने चरित्र के प्रति सजग मंजू प्राणनाथ को उसके गलंत आचरण और सोच के लिए प्रताड़ित करती हुई नजर आती है ।

तो " **घरौंदा** " की छाया से उसका प्रेमी सुदीप विवाह के पूर्व ही संबंधों को बढ़ाने की बात करता है तो छाया इसे स्वीकार नहीं करती । वह विवाह के पूर्व काम-संबंधों को अनैतिक मानती है । पर सुदीप को चारित्र पवित्रता की बातें मध्यमवर्गीय नैतिकता का बोझ लगती है । फिर भी छाया इस बात को न मानते हुए उसे कहती है । "... और दस पन्द्रह दिनों में एकाध बार किसी होटल में ...किसी बगीचे की झाड़ियों में । नहीं,सुदीप इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती ।"[42] और स्पष्ट शब्दों में सुदीप को इंकार करती हुई नजर आती है । इससे हमें पता चलता है कि छाया चारित्र की पवित्रता को महत्व देती है तो सुदीप नहीं ।

इससे हमें पता चलता है कि शेष ने हमारे समाज में चारित्र की पवित्रता को कितना महत्व दिया जाता है इसे इन नायिकाओं के माध्यम से बताया है ।

3:9 व्यवहार चतुर नायिका :

हर इंसान को व्यावहारिक ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है । नहीं तो यह नजर आता है कि लोग उस व्यक्ति का गलत फ़ायदा उठाते है । शेष ने भी अपने नाटकों की नायिकाओं के जरिए यही बात बताने का प्रयास किया है । अतः उनकी नायिकाएँ वक्त की नजाकत को देख उनसे फ़ायदा उठाने की कोशिश करती हुई नजर आती है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " नाटक की नायिका व्यावहारिक ज्ञान रखनेवाली है । तो उसका पति शेखर कला की साधना में मग्न दुनिया की व्यावहारिकता से अनभिज्ञ नजर आता है । लेकिन ललिता तो जिंदगी की जरूरतों से मुँह नहीं मोड़ सकती । इसी कारण वह चाहती है कि शेखर अपनी कला का अभिमान कायम रखकर जीविका चलाने का बंदोबस्त करें । पर शेखर को अपनी कला को बेचना गलत लगता है इस वजह से वह ललिता की बात नहीं मानता । तब ललिता शेखर को कहती हैं -- "आज की दुनिया में केवल प्रतिभा ही सब कुछ नहीं है ...उसके साथ व्यावहारिक पक्ष भी है ... व्यवहारशून्य प्रतिभावान इस दुनिया में सनकी कहलाते हैं ।"[43] अतः यहाँ ललिता शेखर को दुनिया की व्यावहारिकता से परिचित कराती हुई नजर आती है ।

तो " **एक और द्रोणाचार्य** "की एक नायिका लीला में कोरी व्यावहारिकता ही नजर आती है जो दूसरों के भाव-भावनाओं को, उन पर हो रहे अन्याय को नजर अंदाज करती है । इसी करण जब उसका पति अरविंद कॉलेज के प्रेसिडेंट के बेटे को नकल करते हुए पकड़कर उसके खिलाफ रिपोर्ट कर

देता है। तो लीला इस मौके का फ़ायदा उठाने की सलाह अरविंद को देती है। वह रिपोर्ट वापस लेने के ऐवज में अरविद को प्रिंसिपल बनवाने के प्रस्ताव को स्वीकार करने को कहती है। लीला इस बेईमानी को व्यावहारिकता मानती हुई नजर आती है। इसी संदर्भ में उसका अरविंद से यह कहना --"बीना कीमत दीए कुछ मिलता भी है"[44] उसके व्यावहारिक दृष्टिकोन को स्पष्ट करता है। अरविंद भी लीला की सलाह मानकर प्रिंसिपल बन जाता है।

तो इसी नाटक की दूसरी नायिका कृपी में भी यही व्यावहारिकता नजर आती है। वह भी द्रोणाचार्य को भीष्म पितामह के प्रस्ताव को मंजूर करने के लिए मजबूर करती है क्योंकि उसे पता है कि इससे अनाज और कपड़े की समस्या हमेशा के लिए मिट जायेगी। अतः सुविधाओं का पाने के लिए वह द्रोणाचार्य को राजकीय अन्न की दासता में हमेशा के लिए धकेलती है।

यहाँ शेष जी ने लीला और कृपी के माध्यम से यह बताया है कि गलत व्यावहारिक दृष्टिकोन इंसान को कैसे पतन की राह पर ले जाता है।

" **कालजयी** " में हमें नजर आता है कि पुरबी ने अपने व्यावहारिक चतुरता के बल पर कालजयी जैसे निर्मम अत्याचारी राजा की मृत्यु के रहस्य का पता लगाया है। इसके लिए पुरबी को राजा कालजयी की पत्नी बनना पड़ता है साथ ही वैद्यराज मृत्युंजय से भी प्यार का नाटक करना पड़ता है। फिर भी वह अपनी जिम्मेदारी बिना किसी को संदेह हुए बखूबी निभाती हुई नजर आती है। इसी चतुरता के कारण ही पुरबी कालजयी को मारकर कालजयी बन बैठे शीलभ्रद को पहचान जाती है तब वह तलवार से उसे भोंक देती है और खत्म करती है। यहाँ पता चलता है कि पुरबी ने अपनी व्यवहार चतुरता के कारण शीलभ्रद के कपट को तुरंत पहचाना है। तथा उसे मौत के घाट उताराकर सौ वर्षों से चली आ रही गुलामी की दासता को खत्म किया है।

" **घरौंदा** " में हमें नजर आता है कि छाया मि.मोदी से विवाह करने के पश्चात उनसे निष्ठा रखती है। पर उसका पूर्व प्रेमी सुदीप शराबी बन जाता है। इतना ही नहीं उसे नौकरी से भी निकाल दिया जाता है। छाया को मि.मोदी (से शादी) होने के बाद सुदीप से संबंध रखना अनैतिक लगता है। यही बात वह सुदीप को समझाना चाहती है जो बिल्कुल व्यावहारिक और सही है। इस संदर्भ में छाया का मि.मिश्रा से यह कहना --" क्या अतित की लाश ढ़ोते रहना जरूरी है। हम नदी के उस पानी में दुबारा कदम नहीं रख सकते। पानी हमेशा आगे बढ़ चुका होता है।"[45] उसके व्यावहारिक ज्ञान और दृष्टिकोन को दर्शाता है। छाया चाहती है कि सुदीप बीती बातें भूलाकर अपनी जिंदगी नये सिरे से जियें। यहाँ पर छाया के माध्यम से यही बताने की कोशिश की है कि व्यक्ति को प्रतिकुल परिस्थितियों में भी जिंदगी के साथ सकारात्मक दृष्टि रखकर अपनी जिंदगी जीनी चाहिए।

" **अरे ! मायावी सरोवर** "की नायिका रानी सुजाता पहले अपनी गृहस्थी की जिम्मेदारी कुशलता से निभाती हुई नजर आती है और जब राजा इल्वलु ऐंद्राजालिक सरोवर में नहाकर स्त्री बन जाता है ,तो राज्य की जिम्मेदारी भी रानी सुजाता बड़ी कुशलता के साथ सँभाल लेती है । अतः पहले केवल गृहिणी की भूमिका निभानेवाली रानी सुजाता वक्त आने पर बड़े साहस के साथ राज्य का शासन भी चलाते हुए दिखाई देती है । इससे ही उसका व्यावहारिक ज्ञान तथा चतुरता देखने को मिलती है जिस कारण वह जिंदगी में आये इस विचित्र स्थिति का सामना कर सकी है ।

" **पोस्टर** " नाटक में हमें नजर आता है कि मायके से लौटी चैती महसूस करती है कि गाँव का पटेल उनके भोलेपन का फायदा उठाकर उन्हें बहुत कम मजदूरी देता आया है । उसने मायके में अपनी जाति के लोंगो को एकजूट होकर संघर्ष करते हुए, मजदूरों को मालिकों से पिटते हुए, मालिकों से अपनी सही मजदूरी पाकर इज्जत से रहते हुए देखा है तब चैती अपने पति कल्लू तथा अन्य मजदूरों को उनके हो रहे शोषण के प्रति जागृत करती है । जिससे प्रेरित हो सारे मजदूरों के हड़ताल करने पर उनकी मज़दूरी एक रूपए से ड़ेढ़ रूपए हो जाती है । अतः यह सब परिवर्तन चैती के व्यावहारिक चतुरता के कारण ही हुआ नजर आता है ।

इसी तरह की नयिका हमें " **राक्षस** " में दिखाई देती है जो अपनी व्यवहार चतुरता के कारण गाँव के बच्चों की जान बचा पायी है । वह गाँव के बच्चो में राक्षस का डर ना पैदा करते हुए उससे लड़ने का प्रशिक्षण बच्चों को देती है । श्वेतादेवी के इसी कोशिश के कारण बच्चें अपनी खुद की हिफ़ाजत तो करते ही है,राक्षस के प्रतिनिधी रणछोड़दास को भी मार देते है । अतः यहाँ नजर आता है कि श्वेतादेवी की व्यवहार चतुरता गाँव के बच्चों की जान बचा पायी है ।

3 :10 दृढ़शील नायिका :

शेष के कुछ नाटकों की नायिकाएँ जिंदगी में कितने ही संकट क्यों न आये उनसे जुझती हुई दिखाई देती है । वह प्रतिकुल परिस्थिति से मुँह न मोड़ कर उनसे एक निड़र सैनिक की भाँति सामना करती हुई नजर आती है तथा अपने निर्णय पर दृढ़ दिखाई देती है। उनकी इसी विशेषता ने दुर्गा के रूप को उजागर किया है । जैसे :-

शेष के "**मूर्तिकार**" की ललिता परिस्थितियों से जुझती हुई नजर आती । उसे आर्थिक कठिनाईयों का सामना तो करना पड़ा है साथ ही उससे पैदा हुए हालातों से भी लड़ना पड़ा है । फिर भी वह कभी कमजोर हो परिस्थितियों से समझौता करती हुई नहीं नजर आती । आर्थिक कठिनाईयों के कारण ललिता के घर में आटा,दाल, चावल,शक्कर आदि बातों की भी कमी है । मकान मालिक भी किराये के बकाये के कारण हरदम ललिता के मजबूरी का फायदा उठाना चाहता है । तब भी ललिता

का मुंशी से कहना -"अपने सेठ से कह दीजिए कि मैं जिंदा रहते उनके विलास की वस्तु नहीं बन सकती । आपको जो कुछ करना हो कर लीजिए ।" [46] उसकी दृढ़ता को जाहिर करते है । जो आनवाले हर मुसीबत का इटकर सामना करने का हौसला रखती है ।

तो " **बीन बाती के दीप** " में हमें दिखाई देता है कि विशाखा को शिवराज ने उसके साथ किये धोखे का पता चलने पर भी उसकी पति के प्रति निष्ठा कम नहीं होती । इस बारे में डॉ.रीताकुमार का कहना है " उसका प्रेम शिवराज के उपकार को श्रेष्ठ मानता है कि उसने उस जैसी नेत्रहीन असहाय युवती से विवाह किया, जो उसके लिए कुछ. नहीं कर सकती थी । उसके अमूल्य सहयोग से ही वह अपने विचारों और पीड़ा को मूर्तरूप दे सकी ।" [47] जब शिवराज भी अंत में अपने कुकर्म से लज्जित हो दुनिया को यह सच्चाई बताना चाहता है कि उसके नाम से छपे उपन्यास असल में विशाखा ने लिखे हैं। तो विशाखा इसके लिए मना करते हुए नजर आती है । वह नहीं चाहती की साहित्य के क्षेत्र में इस तरह के धोखाधड़ी से साहित्यप्रेमी विव्हल हो जायें । अतः शिवराज को दृढ़ता के साथ यह निर्णय सुनाती है कि -" ... शिव,अब मेरा नया साहित्यकार तुम्हारे ही माध्यम से इस संसार तक पहुँचेगा ।" [48] और इस निर्णय पर अटल रहती हुई नजर आती है ।

यही दृढ़ता "**बाढ़ का पानी** " की नायिका लछमी में भी दिखाई देती है । बाढ़ आने पर गाँव के लोगों ने उनके टीले पर आसरा लिया है । लेकिन ये उँची जातवाले लोंग इन अछूतों के घर रहना,खाना,पीना आदि में झिझक महसूस करते है । गाँव का पंड़ित तो अपना धर्म भ्रष्ट न हो जाये इसलिए खाना खाने से इंकार कर देता है । यह बात लछमी को पता चलने पर वह सबको कह देती है कि -" फिर मैं भी नहीं खाऊँगी । जब तक पंड़ित जी भूखे रहेंगे तब तक इस घर का कोई भात नहीं खाएगा ।" [49] इससे उसकी दृढ़ता का पता चलता है । साथ ही वह चाहती है कि इंसान मुसीबत के समय में तो जात-पाँत के दीवारों को भूलकर इंसानियत के धर्म को निभाये ।

वैसे ही "**बंधन अपने अपने** " चेतना को जब अनादि यह कहता है कि वह उसके बडे. भाई डॉ.जयंत से विवाह कर ले । तो चेतना साफ़ इंकार करती हुई नजर आती है । चेतना को यह कतई मंजूर नहीं कि प्यार एक से हो और विवाह किसी और से किया जाये । अतः वह अनादि को स्पष्ट कह देती है कि, प्यार कोई हस्तांतरणीय वस्तु नहीं और उसने यह अधिकार उसे कभी नहीं दिया कि वह उसे किसी दूसरे को सौंप दे । चेतना को सब कुछ छोड़कर अनंत काल तक अनादि की राह देखना मंजूर है पर डॉ.जयंत से विवाह करना नहीं । अतः वह अनादि को स्पष्ट रूप से इंकार कर देती है । अतः जीवन के ऐसे नाजुक स्थिति में चेतना इस निर्णय के साथ दृढ़ दिखाई देती है ।

" कालजयी " में भी इस प्रकार की नायिका पुरबी है । पुरबी को राजा कालजयी के मृत्यु का रहस्य जानने का दायित्व सौंपा जाता है । तब वह अपना स्त्रीत्व कालजयी को सौंपकर उसे जानने की कोशिश करती है । इतना ही नहीं इस कार्य को करते हुए पुरबी को अपने प्रेमी वसुमित्र की जीभ काटकर अपने हाथों से विष पिलाना पड़ता है तब भी वह अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटती । यह पुरबी के दृढ़ता का ही परिणाम है कि वह जिंदगी के अत्यंत कठिण और भावुक मोड़ पर भी अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभा पायी है ।

यही दृढ़ता हमें **" घरौंदा "** की छाया में दिखाई देती है, जिसने मि.मोदी के साथ शादी के पश्चात पतिनिष्ठता का धर्म ईमानदारी से निभाया है । वह पूर्व प्रेमी सुदीप की मि.मोदी को मार डालने की सलाह को ना मानते हुए नजर आती है । दृढ़ता के कारण ही छाया अपने कर्तव्यों को पूरा कर पाती है । जिस वजह से मि.मोदी को नयी जिंदगी मिलती है । दो हार्ट अॅटॅक आये मि.मोदी की सेहत में छाया के लगन के कारण तेजी से सुधार होता हुआ दिखाई देता है ।

" अरे ! मायावी सरोवर " की नायिका रानी सुजाता इसी दृढ़शीलता के कारण अपने पति राजा इल्वलु झगड़ती हुई नजर आती है क्योंकि स्त्री बना राजा इल्वलु अपने पुत्र कुमार को राजगद्दी पर बैठाना चाहता है । जब की रानी सुजाता अपने बेटे अंशुमाली को राजगद्दी का वारिस मानती है । तब तय यह होता है कि अंशुमाली और कुमार के बीच द्वंद्वं युद्ध करा के जो जितेगा उसे राजगद्दी पर बैठाया जायेगा तो रानी सुजाता इस आव्हान को स्वीकार करती है । यहाँ पर रानी सुजाता अपने इसी स्वभाव के कारण पुत्र के अधिकारों के लिए दृढ़ता के साथ अपने पति राजा इल्वलु से लड़ पड़ी है ।

उसी तरह **" पोस्टर "** की नायिका चैती इसी दृढ़ता के बलबूते पर जमींदार पटेल को विरोध करती हुई नजर आती है । अब तक उनके गाँव के किसी व्यक्ति ने जमींदार पटेल के निर्णय का विरोध नहीं किया है । पर अपने चारित्र के प्रति सजग चैती यह कदापि मंजूर नहीं करती कि पटेल की रखैल बन के जिये । अतः वह पटेल की हवेली पर ड्यूटी करने से साफ़ इंकार करती हुई नजर आती है ।

"राक्षस " की श्वेतादेवी भी गाँववालों के विरोध करने पर भी गाँव के बच्चों को राक्षस के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करती हुई नजर आती है । श्वेतादेवी का मानना है कि हर रोज एक आदमी राक्षस को देने के बजाय उसके साथ लड़ा जायें । इसमें जब गाँववाले उसका साथ नहीं देते तो वह अकेले ही बिना किसी को खबर दिये गाँव के बच्चों को लड़ने का प्रशिक्षण देती है । बच्चों में हौसला और उमंग भर देती है । श्वेतादेवी के इसी दृढ़ता के कारण आखिर में बच्चें अन्याय के खिलाफ लड़ने में सक्षम बने हुए दिखाई देते है ।

इन नायिकाओं के जरिए शेष ने स्त्री सक्षमता की तरफ समाज का ध्यान खींचा है । साथ ही नारी को भी इस विशेषता का महत्व बताने का प्रयास किया है ।

3:11 स्वाभिमानी नायिका

शेष के ज्यादा तर नाटकों की नायिकाएँ स्वाभिमानी दिखाई देती है ।जब कभी किसी ने उनके स्वाभिमान को ठेंस पहुँचाने की कोशिश की है तब उन्होंने उसके खिलाफ आवाज उठायी है । जैसे -" मूर्तिकार ' की ललिता, "तिल का ताड़ " की मंजू , "कोमल गांधार " की गांधारी आदि नायिकाओं ने उनके स्वभिमान को कुचलनेवाले लोगों के प्रति विद्रोह किया हुआ नजर आता है । इन नायिकाओं ने दिखा दिया है कि स्त्री पर अन्याय करने का अधिकार पुरूषों को प्राप्त नहीं है और अगर अन्याय किया तो उसका जवाब उन्हें जरूर देना पड़ेगा । अत : ये नायिकाएँ अपने स्वाभिमान के प्रति जागरूक नजर आती है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " नाटक की नायिका ललिता के आर्थिक मजबूरी का फायदा उठाकर मकान मालिक अनैतिक संबंधो के लिए उसे मजबूर करता है तो ललिता अपने इस अपमान को सहन नहीं करती । वह मकान मालिक का पैगाम लानेवाले मुंशी को जोरदार तमाचा मारती है और कड़े शब्दों में कहती है " तू मुझे पैसों से खरीदना चाहता है । तू हमारी गरीबी का फायदा उठाना चाहता है ---------- तो जा अपने मालिक से कह दे ---- कि दुनिया का पूरा सोना इकठ्ठा करके भी ललिता के नख को नहीं छुआ जा सकता ।" [50] यहाँ पर ललिता ने अपने स्वाभिमान को ठेस पहुँचानेवाले मुंशी तथा मकान मालिक को सबक सीखाया है ।

"**तिल का ताड़** " की मंजू के चरित्र पर शंका लेते हुए धन्नामल, गयाप्रसाद और बनारसीदास उस पर चरित्रहीन, चुड़ैल, बाजारू औरत होने का लांच्छन लगाते है। तब उन्हें मंजू करारा जवाब देते हुए दिखाई देती है । उसे परिस्थितिवश प्राणनाथ के साथ उसकी बीवी होने का नाटक करते हुए उसके घर में रहना पड़ा है । फिर भी इस दौरान मंजू ने ऐसा कोई गलत आचरण नहीं किया जिसके लिए उसे लज्जित होना पडे तथा औरों को शर्मिंदगी उठानी पड़े । उसकी मजबूरी को जाने बिना जब उस पर बाजारू औरत होने का आरोप लगाया जाता है तो सबको मंजू कड़े शब्दों में सुनाती है कि --" खबरदार आपने मुझे बाजारू औरत कहाँ तो । आप खुद दस हजार में अपने लडके को बेचने का प्रस्ताव रखनेवाले दूसरों को बाजारू कहने का कोई अधिकार नहीं रखते ।"[51] इस से पता चलता है मंजू ने उस पर लगाये गये आरोपों का खंड़न किया है। तथा अपने पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठायी है ।

यही स्वाभिमान हमें " **बाढ का पानी** " की नायिका लछमी में दिखाई देता है । लछमी अपनी अभावग्रस्त गृहस्थी बड़ी कुशलता से चलाती है तथा अपने इस हालातों से उसे शिकायत नहीं है । उसका कावेरी से यह कहना हम गरीब है, पर न मुफ्त का खा सकते है, न खिला सकते है । उसके स्वाभिमान को जाहिर करता है ।

" **बंधन अपने अपने** " की चेतना को अनादि यह कहता है कि वह उसके बड़े भाई से विवाह कर ले । तो स्वाभिमानी चेतना इस बात को स्वीकार नहीं करती । वह मानती है कि अनादि ने यह निर्णय एक तर्फा लिया है । उसके भाव - भावनाओं को, राय को जानने की कोशिश भी नहीं की है । इसी कारण वह अनादि को स्पष्ट शब्दों में कह देती है " मैंने केवल तुम्हें अपने मन पर अधिकार दिया है । प्रेम कोई हस्तांतरणीय वस्तु नहीं है । मैंने तुम्हें यह अधिकार इसलिए कभी नहीं दिया कि तुम मुझे दूसरों को सौंप दो ।" [52] अतः चेतना को अपने प्यार की बलि चढ़ाना कतई स्वीकार नहीं । इसी कारण वह अपना विरोध तीखे स्वरों में अनादि पर जाहिर करती है ।

" **कालजयी** " की पुरबी अपने तथा अपने देश की स्वतंत्रता के लिए निर्मम कठोर कालजयी से लड़ती हुई नजर आती है । इसी के तहत अंत में उसे तथा उसके सहयोगियों को बंदी बनाया जाता है । पुरबी को तो षड्यंत्र विश्वासघात और राजद्रोह के आरोप में मृत्युदंड़ की सजा दी जाती है । तब भी पुरबी का विश्वास टूटा हुआ नजर नहीं आता है । उसका कालजयी से कहना -"...मैंने जो कुछ किया हैं, एक पुण्य कार्य किया है । कालजयी, मुझे केवल एक ही बात का दुःख है कि मैं तुम्हें मार नहीं सकी...लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारा और वैद्यराज का अंत दूर नहीं है।" [53] उसके स्वाभिमान को दर्शाते हैं जो अपने देश के स्वातंत्र्य के लिए खुद की आहुति देने में भी पीछे नहीं हटी है ।

" **घरौंदा** " की छाया को भी अपने घर के लिए इंतजार करना मंजूर है पर चाल में गृहस्थी बसाना गँवारा नहीं । बंबई जैसे महानगर में मध्यमवर्गीय लोगों का अपना घर होना तथा किराये पर घर लेना स्वप्नवत ही है । ऐसी स्थिति में सुदीप इन कठिनाईयों को जान कर छाया को राह सुझाता है कि वह चाल का कोई कमरा ले ले जिससे वह शादी कर सकें । पर छाया इसके लिए साफ इंकार कर देती है । वह सुदीप से कहती है --"नहीं रहना है मुझे चाल में । तीन पीढ़ीयाँ कट गयी उस सड़ी -सी चाल में । उस भीड़ में । उस नरक में ।"[54] अतः स्वाभिमानी छाया को मुश्किलों का सामना करना मंजूर है पर किसी भी सूरत में समझौता करना नहीं ।

उसी तरह " **अरे ! मायावी सरोवर** " की नायिका रानी सुजाता अपने बरसों बाद मिले पति राजा इल्वलु से अपने बेटे अंशुमाली के अधिकारों के लिए लड़ती हुई नजर आती है क्योंकि स्त्री बना

राजा इल्वलु अपने बेटे कुमार को राजगद्दी पर बैठाना चाहता है पर रानी सुजाता अंशुमाली को इसका अधिकारी समझती है । और जब राजा इल्वलु उसकी बात नहीं मानता तो वह उसे कहती है - "...मैं अपने पुत्र के अधिकारों के लिए लडूँगी..." [55] अतः स्वाभिमानी रानी सुजाता अपने बेटे के अधिकारों के लिए राजा इल्वलु के आव्हान को स्वीकार करती हुई नजर आती है ।

इसी प्रकार की नायिका हमें " **रक्तबीज** " के उत्तरार्ध में ललिता के माध्यम से दिखाई देती है । जो यह पता चलने पर कि उसके पति का ग्यारह साल अनवरत परिश्रम किया हुआ अनुसंधान डॉ. गोयल ने अपने नाम से छपवाया है तथा खुद इस काम के जरिए दुनिया में अमर बन गया है । इस धोखे के लिए डॉ.गोयल को दंड़ित करना चाहती है । पर फिर ललिता यह सोचते हुए नजर आती है कि डॉ. गोयल ने शंतनु का संशोधन चुराया है दिमाग तो नहीं । वह अपने पति शंतनु को आत्महत्या करने से रोकती है तथा डॉ.गोयल की हत्या करने के लिए उकसाती है क्योंकि शंतनु ने अपनाया हुआ बुजदिली का रास्ता उसे बिल्कुल पसंद नहीं । अतः स्वाभिमानी ललिता इस विश्वासघात के विरोध में अपने पति शंतनु को खड़ा करती हुई नजर आती है ।

उसी तरह " **पोस्टर** " की नायिका चैती भी पटेल की हवेली पर ड्यूटी करने से इंकार करती हुई दिखाई देती है । चैती को अपने स्वाभिमान को गिरवी रखकर पटेल की रखैल होना स्वीकार नहीं है । इसी कारण वह पटेल के सामने नहीं झुकती और उससे लड़ने की ठान लेती है ।

"**राक्षस** " की नायिका श्वेतादेवी को भी अपने स्वाभिमान को कुचलकर राक्षस के साथ समझौता करना बिल्कुल मंजूर नहीं । इसी कारण वह गाँव की नयी पीढ़ी के बच्चों राक्षस के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा दे उनकी फौज तैयार करती हुई नजर आती है । वह हर बच्चे के स्वाभिमान को जागृत कर उन्हें लड़ने का हौसला देती है । इसी हौसले के कारण गाँव के बच्चें आखिर में राक्षस के प्रतिनिधी रणछोड़दास को मारने में सफल होते है ।

उसी तरह " **चेहरे** " की नायिका अध्यापिका और भरोसे जी के संबंधों के लेकर गाँव के लोग गलत अर्थ लगाने लगते है, तो अध्यापिका इसे सहन नहीं करती । स्वाभिमानी अध्यापिका चुप ना बैठते हुए गाँव के लोगों को स्पष्ट कह देती हैं --"भरोसे जी मेरे लिए सब कुछ थे । उन्होंने मुझे वह सब कुछ दिया जो एक पति अपनी पत्नी को एक मित्र अपने मित्र को और एक गुरू अपने शिष्य को दे सकता है ।"[56] अतः स्वाभिमानी अध्यापिका अपने तथा भरोसे जी के संबंधों को गलत अर्थ लगानेवाले लोगों को कड़े शब्दों में उसका जवाब देती हुई नजर आती है ।

" **कोमल गांधार** " की गांधारी भी अपने स्वाभिमान के प्रति जागरूक दिखाई देती है । इसी वजह से अपने पर हुए अन्याय के लिए जिम्मेदार धृतराष्ट्र, भीष्म तथा अपने पिता को क्षमा नहीं कर

पायी है । गांधारी इस बात से आहत है कि उसके आस्तित्व को पूरी तरह नकार कर धोखे से उसका विवाह धृतराष्ट्र से किया । स्वाभिमानी गांधारी इस अन्याय का प्रतिशोध लेना चाहती है । उसका यह कहना - " ये लोग अब समझलें, स्त्री एक खाली जमीन नहीं है । जिसे आसानी से रौंद कर शांती से जिया जा सके । कुरूवंश को अपने इस अन्याय की कीमत चुकानी होगी।" [57] अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के उसके निर्णय को जाहिर करता है ।

इससे पता चलता है कि शेष ने इन नायिकाओं के माध्यम से हर स्त्री को उसके अस्तित्व के जागृत करने का प्रयास किया है ।

3:12 स्वार्थप्रेरित नायिका :

शेष के दो नाटकों की नायिकाएँ स्वार्थप्रेरित नजर आती है जिन्होंने अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए दूसरों का इस्तेमाल करने की कोशिश की है। जैसे --" **नयी सभ्यता के नये नमूने** " की नायिकाएँ स्मृति और धरणी और " **एक और द्रोणाचार्य** " की नायिकाएँ लीला और कृपी ।

शेष के " **नयी सभ्यता के नये नमुने** " की नायिकाएँ स्मृति और धरणी दोनों सगी बहनें और धनी व्यापारी की बेटियाँ हैं। उच्चवर्ग से संबंधित ये नायिकाएँ झूठी शान में जीवन जीते हुए नजर आती है। उनके हर बर्ताव में दिखावा नजर आता है । इत्तफाकन दोनों भी कृष्ण नाम के लड़के से प्यार करती हैं पर दोनों भी इस सच्चाई से अनजान है । इनका कृष्ण के प्रति प्यार भी स्वार्थप्रेरित है । वे दोनों समझती है कि कृष्ण रईस आदमी का बेटा है और उसके पास काफी धन है । पर कृष्ण भी उनके साथ प्यार का केवल नाटक कर रहा होता है। इसी कारण स्मृति और धरणी अपने पिता का घर छोड़कर कृष्ण के साथ शादी करने के लिए कृष्ण के घर आती है । तब दोनों भी अपने सच्चे प्यार की दुहाई देने लगती है तो कृष्ण उन्हें राह सुजाता है कि तीनों मिलकर जहर पी ले ताकि यह समस्या सुलझ जाये । पर जब जान पे बन आती है तो स्मृति और धरणी जहर पीने से इंकार कर देती है । इससे पता चलता है कि उनका प्यार स्वार्थप्रेरित था ।

उसी तरह " **एक और द्रोणाचार्य** " की नायिकाएँ कृपी और लीला दिखाई देती है । दोनों नायिकाएँ दरिद्रता से छुटकारा पाना चाहती है । इसके लिए लीला और कृपी अपने पति अरविंद तथा द्रोणाचार्य को प्रतिकुल परिस्थितियों से जुझने के लिए हौसला देने के बजाए समझौते के लिए मजबूर करती हुई नजर आती है जिसके बदले में अरविंद को प्रिंसिपल का पद प्राप्त होता है तो द्रोणाचार्य कुरूकुल के आचार्य पद को स्वीकारते है और उसी दिन से अरविंद और द्रोणाचार्य केवल " समझौते की संतान " बनकर रह जाते है । इस पद को कायम रखने के लिए अरविंद को चंदू पर और द्रोणाचार्य को एकलव्य पर अन्याय होते हुए जानते हुए भी उनकी बलि चढ़ानी पढ़ती है । इसके लिए सबसे प्रमुख

कारण लीला और कृपी की सुविधाओं को पाने की लालसा ही है । लीला और कृपी के माध्यम से शेष जी ने स्त्री के उस रूप को चित्रित किया है जो अपनी सुख सुविधाओं के खातिर दूसरों पर अन्याय होते हुए देखने पर भी उसे नजर अंदाज करती है ।

निष्कर्ष

शंकर शेष जी ने अपने नाटकों की नायिकाओं के जरिए नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है । शेष जी ने ज्यादातर नाटकों में स्त्री के सकारात्मक रूप को उजागर किया है जो जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखती है तथा मुश्किलों से सामना करने में विश्वास रखती है । साथ ही स्त्री का भावुक, ममतामयी रूप भी चित्रित किया है, जो समझौता कर अपने लोगों को एक साथ बनायें रखने में प्रयत्नशील है । यह नायिकाएँ हिंदू स्त्री का सोशिक रूप उजागर करती है।

अतः शेष जी ने अपने नाटकों के जरिए यही बताने की कोशिश की है कि स्त्री हर क्षेत्र में अपना महत्व सिद्ध कर सकती है । उन्होंने नारी के रणचंडी रूप को बखूबी अपने नाटकों में अंकित किया है जो अपनी शक्ति से राज्य का तख्ता पलट सकती है, क्रांती की ज्वाला सुलगा सकती है । उन्होंने अपने नाटकों की नायिकाओं को केवल एक ही साँचे में बद्ध नहीं रखा है । अतः शेष जी ने नारी के हर पहलू को अपने नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । उनके नाटकों की नायिकाएँ स्त्री के विविध रूपों को हमारे सामने उजागर करती है, जो हमें जीने की प्रेरणा देती है । साथ ही मुश्किलों का सामना करना भी सिखाती है ।

तृतीय अध्याय

संदर्भ ग्रंथ -सूची

लेखक/संपादक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ क्रमांक
1.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.87
2.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.141
3.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.266
4.डॉ.सुनीलकुमार लवटे	" नाटककार शंकर शेष "	पृ.क्र. 53
5.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.328
6.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.387
7.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.413
8.डॉ. शंकर शेष	" कोमल गांधार "	पृ.क्र.37,38
9.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.87
10. सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.18
11.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-4	पृ.क्र.100
12.डॉ.सुनिता मंजनबैल	" शंकर शेष व्यक्तित्व एवं कृतित्व"	पृ.क्र.62
13.जयदेव तनेजा	" नयी रंग-चेतना और हिंदी नाटककार"	पृ.क्र.142
14.डॉ.शंकर शेष	" कोमल गांधार "	पृ.क्र. 66
15.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.61

16.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.11
17.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.17
18.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.123
19.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.409
20.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.10
21.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.44
22.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.132
23.सं.डॉ विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.62
24.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.30
25.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-4	पृ.क्र.93
26.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.170
27.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.389
28.सं.डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-3	पृ.क्र.231
29.सं.डॉ विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2	पृ.क्र.413
30. डॉ.शंकर शेष	" एक और द्रोणाचार्य "	पृ.क्र.59
31. डॉ.शंकर शेष	" एक और द्रोणाचार्य "	पृ.क्र.86
32. रमेश गौतम	" मिथक और स्वातंत्र्योत्तर नाटक"	पृ.क्र.151

33. डॉ.शंकर शेष " कोमल गांधार " पृ.क्र.85

34.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.96

35.सं.डॅ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.30

36.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.228

37.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-3 पृ.क्र.103

38.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-3 पृ.क्र.168

39.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.329

40.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.73

41.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-4 पृ.क्र.100

42.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.327

43.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.71

44.डॉ.शंकर शेष " एक और द्रोणाचार्य " पृ.क्र.33

45. सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.363

46.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.87

47.डॉ.ीता कुमार " स्वातंत्र्योत्तर नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में " पृ.क्र.103

48.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.199

49.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड़ :-2 पृ.क्र.139

50.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :-2 पृ.क्र.73

51.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :-4 पृ.क्र.116

52.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :-2 पृ.क्र.265

53.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :-3 पृ.क्र.175

54.सं.डॉ विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :-2 पृ.क्र.327

55.सं.डॉ विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :-3 पृ.क्र.227

56.सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :-3 पृ.क्र.278

57.डॉ.शंकर शेष " कोमल गांधार " पृ.क्र.38